सके लिये इतने बिदेशी मारिगये दाई ने कहा कि जब रात
होती है तब वह जन्मजली लड़की बावली हो रथा बक
वाद करती है और बातें पूछती है जब विदेशी उत्तर नहीं
दे सकता तब उसको आपही मारडालती है या सूली दे
लावती है उस समय मैं उसके पास नहीं होती उसका
यही स्वभाव है हातिम ने अपने मन में कहा कि यह
मुझे मृत्यु लाई है वा जीवन लाया है इतने में दाई भी
तर गई और खाना ला के कहने लगी कि मरनहार वि
देशी कुछ इस में से खाले हातिम ने कहा कि मैं खाना
तब खाऊंगा जब इसका काम पूरा कर लूंगा अभी य
ह खाना खाना मुझ को महा पाप है यह प्राण देना है खा
ना नहीं यह बात चतुरों और शूरों से दूर है दाई ने क
हा कि जान पड़ता है कि इसका काम तुझी से पूरा पड़े
गा क्योंकि तू भोजन का भार समझता है इतने में रात
होगई सब दाई मामा छूछू लौंडी गुलाम नौकर चाक
र महल्ल से बाहर गये दरवाज़े को अच्छी भांति बंद क
र दिया पहर रात गये वह लड़की बावली की भांति
कूदने लगी और बुरी बुरी बातें कहने फिरि हातिम की
ओर देख के बोली कि तुझ को अपने प्राणों का डर न था जो वि
न जान पहिचान यहां तक चला आया भला अब जो आ
या है तो हमारी बातों का उत्तर दे हातिम ने कहा कि वे
कौनसी बातें हैं उसने कहा कि पहली बात मेरी यह
है कि वह कौन बूंद है जो प्राण धारी हो के उपजता है
हातिम ने सोच के उत्तर दिया कि वह भेद के समु
द्र की बूंद अर्थात गर्भ है जो प्राणधारी होता है फिर
हातिम ने कहा कि दूसरी बात कह उसने कहा
कि वह कौन सा फल है जो सब फलों से

मीठा होता है हातिम ने कहा कि वह बेटा है कि सब फलों
से बहुत अधिक मधुर है फिर हातिम ने तीसरी बात पू
छी वह बोली कि वह कौन वस्तु है जो सब को दिखाई दे
ती है हातिम ने इस बात के सुनते ही कहा कि बीबी वह
मौत है जो किसी को नहीं छोड़ती इस बात को सुन उस
लडकी ने आंखें नीची करलीं और कांपने लगी और कु
रसी पर से धरती पर गिर अचेत होगई इतने में एक
काला सांप बड़ा भयानक वहां दृष्टि पड़ा और फन फना
के हातिम की ओर लपका वह जी में कहने लगा कि जो इ
सको मारता हूं तो दुःख दाई ठहरता हूं जो नहीं मारता
तो यह मुझ को नहीं छोड़ता यह सोच के वह मोहरा जो
रीछ की बेटी ने दिया था पगड़ी से खोल अपने मुह में र
खलिया और उस साप को हाथ से पकड़ एक हांडी में
बंद कर छुरी निकाल अंगनाई में मनुष्य के डील भर ग
ढहा खोद गाडदिया और आप तख़्त पर जा बैठा रात
के पिछले पहर लडकी को चेत हुआ और अपने मुह पर
घूंघट निकाल कहने लगी तू अनजान कौन है और तख़्त
पर किसलिये बैठा है हातिम ने कहा कि हे मूरख तू इत
नी हीं बेर में मुझे भूल गई मैं वही हूं कि कल्ह तेरे बाप के
लोग मुझे हाथों हाथ ले आये थे इस बात के सुनते ही उस
ने अपनी दाई और खवासियों को पुकारा और कहा कि
यह क्या कारण है कि आज यह विदेशी जीता बचा दाई
ने कहा कि परमेश्वर परम कृपाल है इसकी रक्षा की तुम
अपना तो वृतांत कहो अब कैसी हो उसने कहा कि आज
मुझे अपनी देह हलकी मालूम होती है सदा भारी रहती
थी फिर दाई हातिम से पूछने लगी कि तुमने यहां क्या
देखा और तुम्हारा जी कैसे बचा हातिम ने कहा कि मैं ने

म से वह बात न कहूंगा उसके बाप से कहूंगा इतने मे स
वेरा हुआ और प्रातः काल का तारा चमका बादशाह आ
के हातिम से पूछने लगा कि तुम कैसे जीते बचे हातिम ने
कहा कि जब पहर रात गई तब आपकी लडकी बावली
होगई और वाही तवाही बातें करने लगी और मुंह से फे
न निकाल मेरी ओर दौड़ी और कहने लगी कि तूने इतना
बल कहां से पाया जो मेरी हवेली मे आया भला जो आया
है तो मेरी बातों का उत्तर दे निदान उसने तीन बातें कहीं
ईश्वर की कृपा से मैंने उन तीनों के उत्तर दिये उसके सु
नतेही वह थर थराई और कुरसी से नीचे गिर अचेत हो
गई फिर एक सांप उसकी बग़ल से निकल के मुझ पर
लपका मैंने उसे मार उसी अगनाई में गाड़दिया जो वि
श्वास न हो तो देख लो फिर उस लडकी को चेत हुआ औ
र लाज करने लगी बादशाह ने पूछा कि यह क्या भेद था
हातिम ने कहा कि एक जिन्न इस लड़की पर आशिक़ था
वह सांप बन के बिदेशियों को मार डालता था परमेश्व
र की कृपा से यह व्याधि तुम्हारे सिर से टली बादशाह
बहुत प्रसन्न हो कहने लगा कि यह लड़की मैंने तुम्हीं
को दी और यही मेरा बचन था तुम्हें भी चाहिये कि अंगी
कार करो हातिम ने कहा कि यह शर्त है कि मैं जहां चाहूं
वहां लेजाउ कोई मुझे न रोकै उसने कहा कि बहुत अच्छा
जहां तेरा जी चाहैं वहां लेजा हातिम ने भी इस बात को माना
फिर उसी घड़ी उसके बाप ने अपनी कुल रीति से लडकी
को ब्याह के हातिम के साथ कर उसका हाथ हातिम के
हाथ में पकड़ा दिया हातिम ने तीन महीने उसके साथ
भोग बिलास में व्यतीत करदिये जब वह गर्भ वती हुई
तब हातिम ने उससे कहा कि अब तो मुझ को बिदा कर औ

र मेरी बात सुन कि मैं यमन का रहने वाला हूं और यह गर्भ तेरे के घराने का है जो बेटा हो और यमन जाने का अभिलाष करे तो तू इस पते से उसको यमन में भेजना और बेटी हो तो किसी सुशील गुणी विद्यावान के साथ विवाह करदेना और जो मैं जीता रहूंगा तो एक बेर तेरे पास अवश्य आऊंगा और अच्छे प्रकार सुधि लूंगा। ऐसी दो चार बातें उस्से कह बिदा हो थोड़े दिनों में चीन में पहुंचा और वहां के रहने वालों से पूछने लगा कि इस शहर में सौदागरों का महल्ला कहां है पूछते पूछते वहां जा पहुंचा और कहने लगा कि इस महल्ले में यूसुफ़ सौदागर की हवेली कौनसी है और उसके लड़के वालों में से कोई है लोग दौड़े और उसके बेटों से कहा कि एक बिदेशी कहीं से आया है सो तुम को बुलाता है इस बात को सुन वे दोड़ हातिम के पास आये हातिम ने कहा कि तुम्हारे बापने मुझ को भेजा है और एक संदेशा कहा है यह सुनतेही सब लोग हंस पड़े और कहने लगे कि जाना तू बावला है जो ऐसा बकता है उसको मरे बहुत बर्ष बीते हम इस बात पर मरते हैं कि उसने तेरे हाथ संदेशा क्योंकर भेजा हातिम ने कहा कि मित्रो मैं जानता हूं कि यूसुफ़ सौदागर की हवेली चीन में सौदागरों के महल्ले में है और उस्से अधिक उसने एक और पता भी दिया है जो सुनो तो कहूं उन्होंने कहा कि बहुत अच्छा फिर हातिम ने कहा कि उस कोठरी के पास जो उसके सोने की जगह थी उस पेड़ के नीचे बहुतसा धन गड़ा है उसे कोई नहीं जानता वहां खोदो उसमें जो निकले उसके चार भाग करो उस का एक भाग तुम लो और तीन धर्म कार्य में उठाओ यह कहिके जो वृतांत देखा था

वह सब ओर से छोर तक उसने कहा कि मै इस कारण से
जंगल में गया था वहां यह चरित्र देखा नहीं तो मुझे क्या
काम था जो उधर जाता और संदेशा ले के यहां आता उ
न्होंने कहा कि यह बात वे बादशाह के जताये कैसे करैं नि
दान वे सब उसको बादशाह के पास लेगये बादशाह ने
पूछा कि तूने क्या देखा है सच कह हातिम ने कहा कि बा
दशाह सलामत यूसफ़ सौदागर को ऐसे देखा है और
यह संदेशा उसने मुझ से कहा है यह सुन बादशाह भी हं
स के कहने लगा कि क्या तेरे शहर मे कोई फ़स्द लेने वा
ला नहीं मिला जो तू यहां आया तू अच्छा भला बावला
है अपनी फ़स्द ले क्योंकि उसे मरे सौ वर्ष हुये तुझको
कैसे मिला और मूर्ख मुरदे भी किसी से मिलते हैं जो वह
तुझ से मिला और यह समाचार कहला भेजा को
ई है इस बावले को शहर से बाहर निकाल दो हाति
म ने बिनती की कि यह परमेश्वर की गति जानने वाले
जानते हैं क्या आप नहीं जानते कि सहीद मर्द सदा जी
ते रहते हैं और यूसफ़ एक महा कृपण मनुष्य था उस
कृपणता के कारण बड़े दुःख मे है मेरी बात मानिये-
जो वह महा दीन क्लेश से छूटे और सुखी हो जो मैं बाव
ला होता तो उस कोठरी की वस्तु कैसे जानता बादशाह
यह सुन अचंभे मे हुआ और हातिम को साथ ले यूसफ़ की
हवेली में आया और उस कोठरी को खुदावाया तो असं
ख्य धन सम्पदा निकली तब बादशाह ने चार भाग कर
के एक उसके लड़कों को दिया और तीन हातिम को देके
कहा कि तू बड़ा सच्चा और धर्मवान है इस द्रव्य को अप
ने ही हाथ से धर्म मार्ग में उठा हातिम ने थोड़े ही दिनों
मे उस द्रव्य को उठा डाला भूखों को खाना नंगों को कपड़ा

दरिद्रियों को द्रव्य दिया कि सब के सब परिपूर्ण सुखी हो गये फिर बादशाह से बिदा हो शहर शादिला बाद में आया अपनी स्त्री से मिला जो बेटा हुआ था उसको देख प्रसन्न हो उसका नाम सालिम रक्खा कई दिन में बिदा हो फिर जंगल को चला कई दिन में शहीदों के क़बरस्तान में पहुंचा तीन दिन वहां रहा शुक्रवार की रात को वे सब शहीद अपनी अपनी क़बरों से निकले और सुथरा बिछौना बिछा के बैठे उसी समय पर वैसेही खाने उन के आगे चुने गये फिर उसके पीछे यूसफ़ के आगे भी वैसाही खाना रक्खा गया फिर हातिम उससे मिला और पूछा वह कहने लगा कि तुझे धन्य है इस उपकार का फल परमेश्वर तुझको देवै सच तो यह है कि एक शूर बीर सत्यवादी तूही देख पड़ा तेरे ही सहाय से मुझे यह पदवी मिली जो उस दुःख से छूटा और इनके समाने चिल्लाने से बचा खाना पानी तो उन्हीं सब का सा मुझे पहुंचता है पर मसनदैं और कपड़े उनके अच्छे हैं क्योंकि उन्हों ने जीते जी अपने हाथ से पुन्य किया और मैंने मरने के पीछे बहुत दुःख सहि के तब भी परमेश्वर की कृपा से अब प्रसन्न हूं परमेश्वर तुमको इस उपकार का उत्तम फल देगा प्रातःकाल हातिम वहां से बिदा हो एक जंगल में जा पहुंचा वहां एक बूढ़ी स्त्री भिखारियों की भांति बैठी भीख मांगती थी हातिम ने अपने हाथ से हीरे की अंगूठी उतार उसे देदी और आप अपने प्रयोजन के मार्ग में चला इतने में बुढ़िया ने पुकार के कहा कि इके दुके पक्षी परदेशी का राह बाट में परमेश्वर रक्षक है यह सुनतेही सात मनुष्य ढालें तलवारें लगाये दहिने बायें से निकल आये और हातिम से मिलाप की बातें कर

साथ होलिये वे सातौं चोर उसी चुडैल बुढिया के वेटेथे उसने वह जडाऊ अगूठी देख उनको जताया था कि सोने की चिडिया जाती है इस्से वे हातिम के साथ होगये और इधर उधर की गप सप हांकते चले और कहने लगे कि हम चाहते हैं कि तुम्हारी कृपा से किसी शहर में पहुच के वहां के बादशाह की नोकरी करैं हातिम ने कहा कि बहुत अच्छा चले चलो खाने पीने की चिंता न करो जव हातिम उनके छल के जाल में आया तब उन्होने पीछे से आके उसके गले में फांसी डाल दी फिर हाथ पैर बांध दो तीन छुरी मार कुपे में गिरा दिया और जो वस्तु थी सो लेली केवल वही एक पगड़ी जिसमें रीछ की बेटी का दिया हुआ मोहरा बधा था रहगई हातिम कई दिन कुपे में घायल अचेत पडा रहा दो तीन दिन मे जब चेत हुआ तब उस मोहरे को अपनी पगडी से खोल एक कोन में सूखी धरती पर बैठ किसी पत्थर के टुकडे पर अपने थूक से रगड घाओं पर लगाया उसी घडी घाव भर आया और पीर जाती रही फिर उसने अपने जी में कहा कि बडा सोच है कि उन क्रूरों ने वृथा छल किया जो मुझ से ऐसेही मांगते तो सौगंद है कि सब का सब प्रसन्नता पूर्बक उन को देता जो अब मिलैं तो इतना कुछ दूं कि वे जीते जी प्रसन्न रहैं और जब तक जियें तब तक किसी वस्तु की चाहना न रहे इसी सोच में था कि आंख लगगई स्वप्न में क्या देखता है कि एक मनुष्य खडे यह पुकारता है कि हातिम सोच न कर परमेश्वर परम कृपाल दीन दयाल है उसने तुझे यहां पहुंचाया है तो यह उसकी युक्ति सून्य नहीं तू नहीं जानता कि यहां बहुतसा धन गडा है परमेश्वर ने यह संपदा तेरे

ही लिये छिपा रक्खी है अब उठ और ले हातिम ने कहा कि मैं अकेले क्योंकर लूं और कहां ले जाओं वह बोला कि कल्ह दो मनुष्य यहां आवैंगे और तुझे इस अंधेरे कुये से निकालेंगे चाहिये कि तू और वे मिल के यह धन निकालना हातिम ने प्रसन्न हो परमेश्वर का धन्यबाद किया इतने मे प्रातःकाल हुआ थोड़ी बिलम्ब मे दो मनुष्य उस कुये पर आये और पुकार के कहने लगे कि हातिम जो जीता है तौ बोल उसने कहा कि अब तक तो जीता हूं तब उन्होने हाथ बढ़ा के कुये मे डाले और कहा कि तू हमारे हाथ पकड़ के चढ़ आ हातिम उनके हाथ पकड़ के बाहर निकला और उन से मिल कहने लगा कि यहां बहुत सा धन गड़ा है जो तुम निकालौ तौ हाथ आवै उन्हो ने कहा कि तुम यहां ठहरौ हम अभी आते हैं यह कह के एक कुये में पैठा दूसरा ऊपर खड़ा रहा वह बाहर फेंकता था और यह ढेर लगाता जाता था एक क्षण में सब का सब निकाल हातिम को दे वै किसी ओर चलगये हातिम उस द्रव्य के ढेर को देख जी में कहता था कि इस समय जो वै चोर मेरे पास होते तौ यह सब द्रव्य उन को दे देता कि फिर उनको कुछ चाह न रहती और मनुष्यों को न सताते निदान उसने उसमे से एक अच्छा सा कपड़े का जोड़ा निकाल के पहिना और थोड़ा सा धन रत्न जेब में डाल के उनको ढूंढने चला और कहता जाता कि परमेश्वर उस बुढ़िया को फिर मुझ से मिला दे थोड़ी दूर चला था कि वह बुढ़िया रास्ते में भिखारी का भेष बनाये बैठी भीख मंग रही थी और कहती जाती कि जाने वाले बाबा कुछ भलाई लेजा हातिम उसको देखतेही दौड़ा और प्रसन्न हो फूल के समान खिलगया और मुट्ठी भर रुपये मो

हरैं जेब से निकाल उसको दे आगे बढ़ा उसने वे रूपये
लेके वैसेही पुकारके कहा कि इक्के दुक्के बटोही का राह
बाट में परमेश्वर ही रक्षक है इस पुकार को सुन के वे
ई सातों फांसी डालने वाले कसे कसाये इधर उधर फिर
निकल आये और हातिम से मिल के कहने लगे कि तुम
कहा जाते हो हातिम ने उन्हें पहिचान के कहा कि मैं तुम
से एक बिनती किया चाहता हूं जो मानौं तो कहूं उन्होंने
कहा कि क्या कहते हो कहिये हातिम ने कहा कि जो तुम
मनुष्यों का सताना छोड दो तो तुम को मैं इतना धन दूं
कि तुम्हारी सात पीढी तक काम आवे उन्होंने कहा कि ह
म तो पेटही के लिये अपने ऊपर पाप लेते और लोगों
को दुख देते हैं जो इतनी द्रव्य पावैं तो क्या बावले हैं जो
ऐसा खोटा काम करैं हम आज ही से प्रतिग्या करते हैं
कि जिस काम से परमेश्वर प्रसन्न न हो उस काम को
जब तक जियें कभी न करैं हातिम ने कहा कि तुम परमे
श्वर की मन लगा के प्रतिग्या करो और मन से सौगंद खा
ओ तो मैं तुम्हें इतना धन द्रव्य दूं कि निहाल हो जाओ
उन्होंने कहा कि पहिले हमैं दिखला दो तो हम प्रतिग्या
करैं हातिम उनका हाथ पकड कुये पर ले आया और उ
स असंख्य धन को दिखला के कहने लगा कि अब इस
को लो और अपनी बात पूरी करो वे उसे देखते ही बहु
त प्रसन्न हो हाथ जोड कहने लगे कि अब जो कहो सो ह
म करें हातिम ने कहा कि तुम सब इस प्रकार सौगंद खा
ओ कि परमेश्वर सब कुछ देखता सुनता है और सब वृ
त्तान्त जानता है जो आज से हम किसी की वस्तु चुरावैं
वा किसी पन्थी परदेशी को सतावैं तो परमेश्वर के कोप
मे फंसैं उन्होंने इसी प्रकार सौगंद खाई और चोरी छो

ड़ दी हातिम ने सबका सब वह धन उनको दे दिया और धर्म
का मार्ग सिखा के जंगल का रस्ता लिया इतने में एक कुत्ता
जीभ निकाले समाने दिखाई दिया उसने समझा कि इस
जंगल में कोई सौदागरों का क़ाफ़िला उतरा है यह कुत्ता उ
सके साथ का है जब कुत्ता हातिम के पास आया तब उसने
गोद में उठालिया और उसके लिये इधर उधर पानी ढूंढ़ने
लगा और जी में कहता था कि इस जंगल में जो कहीं तालाब
मिले तो इस प्यासे को जीभ पर पानी पिलाऊँ इतने में ए
क गांव दिखाई दिया हातिम उसकी ओर चला वहां के लो
ग गेहूं की रोटी और मठा मुसाफ़िरों को देते थे उसने वह
छाछ और रोटियां लेके कुत्ते के आगे रख दीं कुत्ते ने पेट भ
र के खाया और हातिम उसकी ओर देख के कहता था
कि क्या अच्छी बनावट का सुन्दर कुत्ता है और वह उसके
सामने बैठा परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा था इतने में
हातिम प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगा और म
न में परमेश्वर का स्मरण कर कहता था कि यह तेरी ही
सामर्थ है कि तू ने चौरासी लाख प्रकार के जीव उत्पन्न
किये और एक के आकार को दूसरे के प्रकार मे मिल ने
न दिया इतने में एक कड़ी वस्तु सींग सी उसके हाथ में ल
गी जब विचार के देखा तो लोहे की कील देख पड़ी हाति
म ने तुरंत वह कील उसके सिर से निकाली तो वह कुत्ता
एक परम सुन्दर मनुष्य होगया तब हातिम अचंभे में हो
उस्से पूछने लगा कि यह क्या भेद है और तू कौन है कि प
हिले तू कुत्ता था फिर कील के निकलते ही मनुष्य होग
या उसने देखा कि इस मनुष्य ने मेरा बड़ा उपकार किया
इससे अपना वृतांत छिपाना न चाहिये यह सोच के हा
तिम के पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि मैं मनुष्य

हूं तेरी कृपा से अपना निज रूप पाया हातिम ने कहा कि
यह क्या कारण था जो तू कुत्ता होगया था उसने कहा कि
मैं सौदागर का बेटा हूं मेरा बाप बहुत सी वस्तु लेके चीन
को गया था वह वस्तु उसने वहां बेची और वहां से कुछ
मोल लेके खता शहर में आया उसकी बिक्री में बड़ा नफ़ा
हुआ फिर बड़ी धूम धाम से मेरा ब्याह किया फिर कुछ दि
न बीते उसका देहान्त हुआ वह संपदा मेरे हाथ लगी
बहुत दिन तक उसे बेच बेच भोग बिलास करता रहा ज
ब घटने लगी तब मैं खताशहर की वस्तु ले चीन को गया
और वहां बेच और मोल ले अपने शहर को चला जब तक
मैं आऊं तब तक वह कुमार्गी स्त्री जो बापने ब्याह दी थी
मेरे पीछे एक हबशी गुलाम से उलझगई और यह लो
हे की कील जादूगरों से पढ़वा अपने पास रख छोड़ी थी
जब मैं घर में आया और एक दिन अचेत सोगया उसने
घात पाके यह कील मेरे सिर में ठोंकि दी कि मैं कील के ल
गतेही कुत्ता होगया उसी घड़ी उसने दुतकार के निकाल
दिया मैं कान फट फटाते बाजार में आया वहां के कुत्ते मु
झे बाहिरी कुत्ता जान भूंक के दौड़े उनके डर से आज तीस
रा दिन है कि मैं शहर छोड़ इस जंगल में भूखा प्यासा प
ड़ा फिरता था आगे क्या कहूं आज परमेश्वर ने अपनी
कृपा से तुझे यहां भेजा जो तूने खाना खिलाया पानी पि
लाया मनुष्य बनाया हातिम इस बात के सुनतेही सिर
झुका लिया फिर कहने लगा कि तुम्हारा घर किस शहर
में है वह बोला कि इस जंगल से तीन दिन की राह पर है
और उसका सूरत नाम है हातिम ने कहा कि उस शहर में
हारस सौदागर भी रहता है और उसकी बेटी तीन बातों
का उत्तर मांगती है उसी लड़की ने मुझे इस बात के समा

चार लाने को भेजा है कि मैं ने वह काम न किया जो आज
की रात मेरे काम आता उसने कहा कि यह बात सच है।
और मैं भी उसी शहर का रहने वाला हूं फिर हातिम ने
कहा कि तू इस कील को अपने पास रहने दे जो तेरा जी
बदला लेने को चाहे तो घात पाके अपनी जोरू के सिर में
गाड देना वह कुतिया होजायगी इसी ढब की बातें कर
ते हुये वे दोनों वहां से चले और तीन दिन में वहां आप
हुंचे वह सौदागर बच्चा हातिम को अपने साथ ले घर
आया और उसको डेवढी में बैठा के आप भीतर गया
लौंडियां बांदियां पैरों पर गिर पड़ीं और बीबी उस ह
बशी से लपटी हुई सोती थी यह दसा देखि तलवार नि
काल उस गुलाम का गला काटडाला फिर वह कील बी
बी के सिर में ठोकी वह उसी घड़ी कुतिया होगई तब उ
से रस्सी से बांध के बाहर निकल लाया और हातिम
को हाथ पकड़ भीतर ले गया और एक बहुत अच्छी म
सनद पर बैठाल के उस कुतिया को दिखा दिया और-
कहा कि यह वही व्यभचारिणी स्त्री है जिसने मुझे मनु
ष्य से कुत्ता बनाया था और यह हबशी वही विश्वास
घाती मेरा गुलाम है जिसने इसे जोरू बनाया था हाति
म यह देख अचंभे में हुआ और कहने लगा कि तू ने उ
सको क्यों मारडाला उसने कहा कि इही इसका दंड था
जो उसके आगे आया इस डर से अब कोई ऐसा काम न
करेगा और इस समाचार को सुन के जो किया चाहता
होगा सो भी रुक जायगा यह साहस मैंने सब के डराने
के लिये किया है यह कहि के उस हबशी को अपनी अंगना
ई में गाड दिया और लौंडियों को इनाम दे के प्रसन्न किया
और सारी रात हातिम के आदर सत्कार में खिलाने पिला

ने के हर्ष आनंद में रहा जब प्रातःकाल हुआ तब हातिम उ
स्से बिदा हो कारवां सराय में आया और उस सौदागर
बचे से मिलि के पूछने लगा कि क्या करते हो प्रसन्न तो
हो उसने कहा कि आप के धन प्राण की कुशल मनाता हूं
अब बहुत दिनौं से वह शब्द नहीं आता इसलिये हारस
की बेटी आप की आशा कर रही है हातिम ने कहा कि कु
छ चिंता नहीं मैं उसके समाचार ले आया हूं यह कहि
वह हारस की बेटी के पास गया वहां के लोगों यह समा
चार उसको पहुंचाया वह दालान के दरौं पर परदे डाल
भीतर हो बैठी और लोगों से कहने लगी कि उसे बुलालो
जब हातिम परदे के पास आया उसने उसे कुरसी पर बि
ठा के पूछा हातिम जो देखा सुना था सो सब कहि सुनाया
उसने कहा कि सत्य वादी यह सच है अब वह शब्द नहीं
आता अब शीघ्र जाके माहरू परी शाह का मोहरा ला हा
तिम उसी समय बिदा हो उस सौदागर बचे के पास आ कह
ने लगा कि तू धीर्य कर अब मैं माहरू परी शाह का मोह
रा लेने जाता हूं और उसकी बात पूरी करता हूं और तेरी
प्यारी से तुझे मिलाता हूं यह बात उस्से कहि जंगल को
चला कुछ दिन बीते एक वृक्ष के नीचे बैठ के सोचने ल
गा कि अब यह चाहिये कि देवौं के बादशाह से मिलिये
और उसी से माहरू परी शाह का मकान पूछिये वह उस
का पता बता देगा यह मन में ठान उसी गढ़हे में उतरा
जिसमें पहिले उतरा था थोड़े दिनौं में वही सुहावना जं
गल देख पड़ा उस्से चल के उस गांव में पहुंचा जिसमें
पहिले गया था वहां के लोग चारौं से निकल आये और
हातिम को पहिचान के बस्ती में लेगये बड़ी प्रतिष्ठा से म
सनद पर बिठा के महिमानी की ऐसेही सब लोग अपने

गांव मे लेजाके महमानी करते थे फिर दूसरे गांव में प
हुंचता था निदान फ़रोकाश बादशाह के महल तक पहुं
चा उसने आगे बढ के लिया और बहुत अच्छी मसनद
पर बिठाया बडे हर्ष से आनंद की सभा जमाई और पूछा
कि अब आप के आने का क्या कारण है हातिम ने कहा कि
माहरू परी शाह के हाथ में जो मोहरा है उसके लेने को आ
या हूं उसने कहा कि वह मोहरा उस्से कोई नहीं लेसकता
देवों की मजाल नहीं कि वहां जावें और जीते फिर आवें तु
मतो किस गिनती में हो हातिम ने कहा कि कुछ चिंता
नहीं जिस परमेश्वर ने यहां तक पहुंचाया है वही वहां
भी पहुंचावेगा पर मैं तुम से एक देव ऐसा चाहता हूं
कि जो मार्ग जानता हो इसलिये कि कहीं राह न भूल जा
उं फरोकाश ने कहा कि इस बात का पीछा छोडो यह अ
च्छा नहीं जो तुम करते हो वह बोला कि मुझ से यह कब
हो सकता है क्योंकि अपने बचन का तोड़ना मेरा काम
नहीं यह बात सुन फ़रोकाश चुप रहगया और कुछ न
बोला हातिम तीन दिन तक वहीं रहा चौथे दिन कहने
लगा कि अब मैं नहीं रह सकता कहीं वह अधमरा आ
शिक़ मेरी राह देख मरन जाय और उसका पाप मेरे सि
र परहै जो मैं यहां आनंद करों तो परमेश्वर को क्या
उत्तर दूंगा फ़रोकाश ने कई देव हातिम के साथ करि
दिये कि तुम इसको माहरू परी बादशाह के राज्य तक
पहुंचा दो और उसके आने तक वहीं बैठ रहो हातिम उन्हें सा
थ ले वहां से चला और एक महीने में माहरू परी बादशा
ह के राज्य के पास पहुंचा तब देवों ने कहा कि इस पहाड़
से उसका राज्य है आगे हम पैर नहीं रखसकते जो उसके
राज्य में जाता है वह उसको जीता नहीं छोड़ता निदान दे

वहीं रहे और हातिम उनसे विदा हो उसकी राज्य में गया कुछ दिन में एक पहाड़ जो आकाश से बातें करता था दिखाई दिया और उस पर मेवों के वृक्ष भी फले फूले अ न गिनती दिखाई पड़े हातिम उसकी ओर चला जब उस के पास पहुंचा तो सब ओर से परी की सेना ने उसे घेर लिया और कहा कि यह मनुष्य है इसे जीता न छोड़ना चाहिये कि यह पहाड़ पर चढता है इतने में और भी प हाड़ से उतरे उसका हाथ पकड़ के ले गये बड़ी तौक़ पहिना के पूछने लगे कि तू कौन है यहां किस लिये आया है और कौन तुझे लाया है सच बता हातिम ने कहा कि मुझ को प रमेश्वर यहां तक लाया है और सूरत शहर से आया हूं इस बात के सुनतेही उन्होंने कहा कि मालूम हुआ कि तू माहरू परी बादशाह का मोहरा लेने आया है क्यों सच है वा नहीं तब हातिम अपने मन में सोचने लगा कि जो सच कहता हूं तो जीता न छोडेंगे जो छिपाता हूं तो झू ठ बोलना पड़ता है इस्से यही भला है कि चुप हो रहूं य ह समझ के गूंगा बनगया कुछ न बोलता तब उन्होंने आ पस में बिचार किया कि इसे आग में डाल देना चाहिये उन्होंने हज़ारों मन लकड़ी इकट्ठी करके आग लगादी तब उसकी लू आकाश तक पहुंची तब हातिम को उठा के उस आग में डाल दिया हातिम तीन दिन तक उसी आ ग में रहा जब वे लकड़ियां जलगईं तब हातिम निकला तो उसके कपड़े का एक धागा भी न जला था वहां से ए क ओर चलदिया थोड़ी दूर गया होगा कि परीज़ाद सब ओर से दौड़े और पूछने लगे कि इस सूरत का एक मनुष्य आया था उसको हम ने जला के राख करदिया अब तू आ या है क्या वही है वा दूसरा है बता सच कह हातिम बोला

अरे मूर्खो जो आग में पड़े तो कैसे जीता बचे फिर उन्हों ने
हातिम को एक भारी पत्थर के नीचे तीन दिन तक दबा र
क्खा चौथे दिन निकाल के संग फिरा के ऐसे बल से फें
का कि वहां से अठारह कोस पर समुद्र में जा पड़ा और
उसे एक घड़ियाल निगल गया इस चोट से वह ऐसा
अचेत था कि यह न समझा कि मैं कहां था और कहां आया
जब चैन हुआ तब आप को घड़ियाल के पेट में देख के
घबराया और दौड़ दौड़ उसके कलेजे को पांव से कुच
लने लगा हातिम के न पचने से घड़ियाल व्याकुल होके
सूखे में आ हातिम को उगल दिया फिर हातिम भूखा प्यासा
किसी ओर चला गया जब चल न सका तब रेत में गिर
पड़ा और चारों ओर तकने लगा इतने में एक परीज़ादों
का झुंड अहेर खेलता करता हुआ आ पहुंचा वह उसे
देख कहने लगा कि यह मनुष्य कौन है और यह क्योंक
र आया यह निश्चय किया चाहिये एक ने हातिम से क
हा कि तुझे यहां कौन लाया झटपट बता हातिम ने कहा
मुझे परमेश्वर लाया जिसने मुझे और तुझे उत्पन्न किया
और दूसरा दिन है कि घड़ियाल के पेट से मुझे भी जीता
बाहर निकाला जो तुम्हें परमेश्वर ने श्रद्धा दी है तो कु
छ खाने पीने की सुधि लो उन्होंने कहा कि हम तुझे दाना
पानी क्योंकर दें हमारे बादशाह की आज्ञा है कि जिस
मनुष्य को जहां पाओ वहीं ठिकाने लगाओ जो तुझ को
न मारें और खाने पीने को दें तो बादशाही क्रोध में पड़ें
इतने में उन्हीं में से एक ने कहा कि मित्रो परमेश्वर से
डरो कहां बादशाह कहां यह भिखारी कुछ आप से य
ह नहीं आया न जानिये घड़ियाल इस को कहां से ला
या है कुछ दिन इसकी जीनी था जो उसके पेट से निकला

और मनुष्य हम सब से उत्तम कहलाते हैं इस्से उचित है कि इसको अपने घर लेजावैं और पालन करें उन्होंने कहा कि जो हम इस को रक्खैं और खाना देवैं पर ऐसा न हो कि परियों का बादशाह सुनै तो हम को मार डालै तो वृथा प्राण जाते रहैं हातिम ने कहा कि जो मेरे मारे जाने से तुम्हारा भला हो तो न चूको मारही डालो इस साहस को देख वे आपुस मे कहने लगे कि यहां से सात दिन की राह पर हमारा बादशाह रहता है ऐसा कौन है जो यह समाचार बादशाह से कहैगा यह सोच के वे सब मिल हातिम को अपने घर लेगये और भांति भांति के मेवे और खाने उसके आगे धरे हातिम ने तृप्त हो के खाया और पानी पिया और प्रसन्नता से बैठा और परीज़ाद भी उसके आस पास आबैठे और बात चीत करने लगे और उसके रूप पर आशिक़ होगये कई दिन में हातिम ने उखताके कहा कि मित्रो अब मुझे बिदा करो कि जिस काम को आया हूं उसके लिये परिश्रम करूं उन्होंने कहा कि वह काम क्या है और तुम्हें यहां कौन लाया हातिम ने कहा कि मुझे फ़रो क़ाश बादशाह के देव माहरू परी बादशाह के देश में लाये थे तुम्हारे भाइयों ने तीन वार मुझे आग में डाला परम कृपालु परमेश्वर ने बचा लिया फिर उन्होंने समुद्र में डाला वहां एक घड़ियाल निगल गया जब वह पचा न सका तब उसने तीर पर आके उगल दिया इतने में तुम मिलगये तुम कृपा कर घर मे ले आये और मेरा आदर सन्मान किया यह सुन उन्होंने कहा कौन सा काम है जिसके लिये तूने इतने क्लेश सहे हातिम ने कहा कि माहरू परी बादशाह से कुछ मेरा काम है उन्होंने कहा कि अरे मूर्ख तू हमारे सामने माहरू परी बादशाह

का नाम मत ले क्योंकि हम उस के नौकर हैं उसने अपने राज्य से बाने पर शहर शहर में चौकियां बैठाली हैं और यह कहा है कि मेरे देश में कोई मनुष्य और देव आने न पावे जो वह बादशाह सुनेगा कि यहां कोई मनुष्य आया है तो हम को जीता न छोड़ेगा और तुझ को भी मार डालेगा फिर हातिम ने कहा कि जो मेरे मरने का समय अभी नहीं तो मुझ को कोई मार न सकेगा और जो तुम अपने लिये डरते हो तो मुझे बांध ले चलो परमेश्वर जो चाहेगा सो करेगा उन्होंने कहा कि हम से यह नहीं हो सकता क्यों कि जिसका पालन किया है उसको मारने के लिये क्यों कर देवें हातिम ने कहा कि मेरे मरने का सोच तुम न करो क्योंकि मुझे माहरू परी बादशाह के पास जाना है चाहे मारें चाहे छोड़ें यह सुन वे अचंभे में हो रहे और आपुस में सम्मत करके कहने लगे कि इसको यहीं रखिये और बादशाह को यह वृत्तांत लिख भेजिये जो वहां से आज्ञा हो सो कीजिये इस बात पर सबका सम्मत हुआ तब यह लिख के एक के हाथ भेजा कि हे पृथ्वी नाथ एक मनुष्य कुल्लजुम नदी के तीर हाथ आया सो उसे बधुये के समान अपने घर में रक्खा है जो आज्ञा हो तो आपके पास भेजवा देवें निदान वह वहां से लिखा ले के चला और सातही दिन में राज्य द्वार पर जा पहुंचा द्वारपालों ने बादशाह से बिनती की कि प्रभु कुलजुम नदी के तीर का एक चौकीदार आया है और वहां के हाकिम का लिखा पत्र भी लाया है आज्ञा हुई कि उसको सामने लाओ उसने सामने आके प्रणाम कर वह लिखा निवेदन किया बादशाह ने पढ़ के कहा कि उसे शीघ्र बड़ी रक्षा से लाओ कई दिन में वह देव उत्तर लेके

वहीं आ पहुँचा और कहने लगा कि बादशाह की आज्ञा है कि उसको शीघ्र राजद्वार पर पहुँचाओ वे सुनतेही हातिम को अपने साथ लैके चले और यह चरचा सब ओर फैली कि एक मनुष्य पकड़ा गया है माहरूपरी बादशाह के पास जाता है यह बात सुन मीना परीज़ाद की बेटी ने अपनी हमजोलियों से सम्मत किया कि बादशाह के देश में एक परम सुन्दर रूपवान मनुष्य पकड़ा आता है उसको देखना चाहिये कि उसका कैसा रूप है उन सबो ने कहा कि जो देखा चाहो तो मार्ग में देख लो क्योंकि जब बादशाह के पास पहुँच जायगा तो उसे कोई न देख सकेगा यह सुन वह अपनी माके पास आई और बाग़ जाने का बहाना कर बिदा हुई उस शहर की यह रीति थी कि जो कोई बाग़ देखने जाता सो चालीस दिन तक वहीं रहता निदान वह वहां से चली थोड़ी दूर जाके हमजोलियों से कहने लगी कि उस मनुष्य को कैसे देखैं उनमें से एक ने कहा कि क़ुलज़ुम नदी के चौकीदार उस रस्ते से लिये जाते हैं जो वहीं चल के देखो तो बहुत अच्छा है यह सुन वे सब की सब उसी ओर गईं तो क्या देखतीं हैं कि बहुत बड़ा लशकर पड़ा है हुसना परी ने एक परी से कहा कि तू जाके उन से पूछ कि तुम कौन हो और कहां से आये हो इस बात का निश्चय कर के शीघ्र फिर आना वह गई और उन से पूछने लगी कि तुम कौन हो और कहां से आये हो उन्होंने कहा कि हम क़ुलज़ुम नदी के चौकीदार हैं एक मनुष्य को पकड़े लिये बादशाह के पास जाते हैं उसने कहा कि कौन सा मनुष्य है जिसको तुम ले चले हो टुक हम भी उसे देखैं उन्होंने उसे हातिम को देखा के कहा कि वह मरन हार

यही है उसने देखा कि एक मनुष्य नवीन तरुण फूला हुआ फूल सा रूप में चन्द्र समान बिरकड़े बाल बंधुआ सा बैठा ठंढी सांसे लेता है वह वहां से फिर आई और हुसना परी से उसकी तरुणाई का रंग रूप कहने लगी यह सुन हुसना परी को उसके देखने का बड़ा अभिलाष हुआ और अपनी परियों से कहने लगी कि तुम उसे कैसे देखें उन्होंने कहा कि जब तक रात होगी तब सब सिपाही सो जांयगे उस समय हम चोरी से उड़ालावैंगीं और तुम्हें दिखला देंगी इतने में सूर्य अस्त हुये। और रात होगई परियां उस लशकर की ओर चलीं क्या देखा कि वह अचेत सोता है तब हातिम के सिर पर अचेत टोना डाल उठा के हुसना परी के बाग़ मे लेगई और हुसना से कहा कि हम उस मनुष्य को आपके बाग़ में छोड़ आई हैं वह सुनते ही बाग़ की ओर चलीजा के क्या देखती है कि एक परम सुन्दर मनुष्य पड़ा है देखते ही आशिक़ होगई उस अचेत को चेत में किया हातिम ने जो आंखें खोल के देखा तो एक परम सुंदर कांता सरहाने खड़ी है सहसा हक्का बक्का हो कहने लगा कि तू कौन है और मुझे यहां कौन लाया उसने करास्त कर मुंह फेर हंस के कहा कि यद्यपि यह घर मेरा था परंतु अब तेरा हुआ मेरा नहीं है हातिम अपने जी में चिंता कर कहने लगा कि ये परियां स्त्रियां हैं वह लशकर पुरुषों का था और मैं उनकी क़ैद में था इस बाग़ मे कैसे आया निदान घबरा के कहा कि तुम सच कहो कि कौन हो और मैं यहां कैसे आया हुसना परी ने कहा कि यह बाग़ मीना परीज़ाद ने बनाया है और मैं हुसना परी उसकी बेटी हूं तेरे आने की चरचा जो सारे शहर में है

सो मुझे तेरे देखने का बड़ा अभिलाष हुआ इसलिये ये
परियां वहां से उड़ा के यहां लाई हैं हातिम ने मुसक्या के
कहा कि मेरे लाने का क्या कारण है तथा मेरे काम में वि
घ्न किया उसने कहा कि वह कौन सा काम है मुझे जताओ
जिस लिये इतना घबराते हो उसने कहा कि माहरूपरी
शाह का मोहरा लेने आया हूं वह हंस के कहने लगी
कि वह मोहरा उसके हाथ से लेना बड़ा काम रखता है
और बहुत कठिन है क्योंकि जहां देवता न जासके यहां
मनुष्य कैसे जावे पर भाग्य वस हाथ लगै तो लगै
और मैं भी अपने बस भर परश्रम करूंगी हातिम य
ह बात सुन प्रसन्न हुआ निदान वे दोनों भोग बिलास
करने लगे इतने में उस लश्कर के लोग जागे और चौ
कीदारों ने हातिम को अपनी जगह पर न पाया और
घबरा के बहुत दौड़ धूप की पर न मिला तब जाना कि
कोई परी उसपर आशिक़ हो उसे चुरा लेगई जो बाद
शाह सुनै तो हमारी खाल खींचे अब इसमें ही भला
है कि कहीं छिप रहें और चुपके चुपके ढूंढा करें जब
कहीं उसका खोज मिलै तब बादशाह के पास ले चलें
यह कह के सब के सब भागे और किसी जगह छिप र
हे जब सांझ होती तब रात भर सवेरे तक ढूंढते और
दिन भर छिपे रहते ऐसेही बहुत दिन बीते एक दिन
माहरूपरी शाह ने कहा कि अब तक वह मनुष्य नहीं आया
क्या कारण है कोई जावे और शीघ्र समाचार लावे इस
आज्ञा के होतेही एक परीज़ाद उड़ा और पल भर में व
हां जा पहुंचा जहां से हातिम भेजा गया था और कहा
कि बादशाह राह देखते हैं वह मनुष्य अभी तक न
हीं पहुंचा उसने कहा कि बहुत दिन बीते कि मैंने उसे

अपने लश्कर के साथ भेजदिया है यह बात सुन उस
ने आके ब्यौरा वार वृत्तांत कहा बादशाह यह समाचा
र सुनते ही आग होगया और एक सरदार को बुला के
कहा कि तुम अपनी फ़ौज समेत जाके उन दुष्टों को ढूंढ
देखो वे उसको कहां लेगये वह अपना लश्कर साथ
लेके गया और उनको ढूंढने लगा इतने में एक उसके
लश्कर का भागा उनके जासूसों को दिखाई दिया उ
सको बांधे हुये बादशाह के सामने लेगये बादशाह
ने उसपर क्रोध करके कहा कि सच कह वह मनुष्य
कहां है उसने कहा कि जो प्राण दान पाओ तो उसका
वृत्तांत बरणन करूं बादशाह ने कहा कि क्या कहता
है शीघ्र कह नहीं तो जीता न छोडूंगा उसने हाथ जोड़
बिनती की कि हम सब के सब उसे जगह तक बड़ी र
क्षा से लाये थे रात को अचेत होके सोगये उस बीच को
ई उसे चुरा लेगया वह आप से नहीं गया क्योंकि उस
को आपके दरशन का बड़ा अभिलाष था हम लोगों
को उसका बड़ा अचंभा है परंतु जब प्रातःकाल हम
लोगों ने उसे न देखा तब आप के क्रोध के डर से भागे
जहां तहां छिप रहे पर रात को ढूंढा करते थे यह सुन
बादशाह ने उसे क़ैद किया और पांच छः हज़ार परी
ज़ादों को बुलवा के कहा कि तुम उसको जहां पाओ व
हां से ले आओ वे इस बात के सुनते ही चारों ओर उस
को ढूंढने गये एक परीज़ाद मीना परी ज़ाद के बाग़ में
जा पड़ा वह वहां एक कोन में छिप रहा इतने में हुसना परी
हातिम के साथ गलबाहीं डाले अठखेलियां करती हु
ई देख पड़ी जासूस कोन से निकला और उसे पहिचा
न के कहा कि अरे दुष्ट इसको बादशाह ने बुलाया था

और हम बड़ी रक्षा से लिये जाते थे हमको अचेत पा
के इसको उड़ालाई जो अब भी अपना जीना चाहता है
तो इसे हमें दे दे कि हम इसको बादशाह के पास ले-
जाय हुसना परी इस बात के सुनते ही आग होगई औ
र कहने लगी कि अरे जवानी मरे तू बे पहचानता म
नुष्य मेरे बाग़ में क्यों आया और क्यों जीभ चलाता है
क्या कोई नहीं है जो इस मुये गंवार को मारे यह सुनते
सब परियां उस पर दौड़ी वह डर के मारे अपने शहर
की ओर भागा और मुंह काला कर राजद्वार पर जा
पुकारा बादशाह ने अपने लोगों से कहा कि देखो इ
स परीज़ाद को किसने सताया है और उसे आगे ला
ओ जो वह तख़त के पास पहुंचा तब हाथ जोड़ बिन
ती करने लगा कि मैं मीना परीज़ाद की बेटी हुसना प
री के अन्याय से पुकारता हूं और मैं उसी लश्कर का
हूं जो उस मनुष्य को यहां लाता था रात को वह चुरा के
अपने बाग़ में लेगई अब उससे भोग विलास करती
और मज़े उड़ाती है मैं ढूंढ़ते ढूंढ़ते जो इस बाग़ में जा
निकला तो उसी मनुष्य को देखा और वहीं पुकार म
चाई कि इसको बादशाह ने बुलाया था शीघ्र मुझे देदे
कि मैं वहां पहुंचाओ वह तो शराब के नशे में चूर हो
रही थी अपनी परियों से कहा कि इसे मारो वे मेरे ऊप
र दौड़ पड़ीं इस्से मैं भागा आया यह सुनते ही बादशा
ह आग होगया और तीस हज़ार परीज़ादों को आज्ञा दी
कि तुम मीना परीज़ाद को उसकी जोरू बेटी समेत बांधके शीघ्र पकड़
लाओ बे सब के सब उसी क्षण दौड़े और उसका घर घेरलिया व
ह इस बात को कुछ भी नहीं जानता था वह अचंभे में
रहगया कि इस क्रोध का क्या कारण है उन्होंने कहा

कि तेरी बेटी एक बादशाह के बंधुवे को उडालाई है और उसके साथ अपने बाग़ मे भोग बिलास करती है यह सुन वह डरगया और उस बाग में आया तो क्या देखता है कि ठीक हुसना परी उस मनुष्य के साथ रंग रलियां कर रही है यह देख घबराके एक दो थप्पड उसके मार के कहा कि अरी अभागी तू ने यह क्या कुकर्म किया कि मा बाप का नाम डुबोया बादशाह की फौज़ तेरे पकड ने को आई है संभलजा यह सुनतेही वह डरी और थर थराने लगी मुह पीला पडगया आसूं भर आये इतने बादशा ही फौज़ आपहुंची और उन सबों को पकड के राजद्वार पर लेगये फौज़ का सरदार आके बिनती करने लगा कि पृथ्वीनाथ मीना परीज़ाद ने आने में कुछ तक़रार न की अपने कुनबे समेत हाथ बांधे चला आया बादशाह ने कहा कि मीना परीज़ाद को सामने लाओ उसने आते ही बिनती की कि मैं इस वृतांत को कुछ नहीं जानता था और सब प्रकार से आपका आज्ञा नुवर्ती हूं बादशाहने दयाकरके उसका अपराध क्षमा कियाजबउन्होंने हातिम को साम्हने लाके खड़ा करदिया तब बादशाह ने उसे परम सुंदर रूपमान देख बडे प्यार से बुलाके अपने पास बैठाला और कुछ बातें कर के पूछा कि तू मनुष्य होके मेरे शहर मे कैसे आया और ऐसा क्या काम है जिसके लिये इतना दुख सहा हातिम ने कहा कि मैं आप के दर्शन के लिये आया हूं फ़रोकाश बादशाह ने आपके गुणों का वरण न यहां तक किया कि मैं कह नहीं सकता इस्से मेरे मन मे आपके दरशन का अभिलाष अत्यंत बढा सब प्रकार से मैने अपने को यहां तक पहुंचाया फिर बादशाह ने पूछा कि मेरी राज्य में तुझको न लाया हातिम ने कहा

कि फ़रोक़ाश बादशाह के देव मुझे लाये हैं फिर बादशाह ने पूछा कि इन दिनों मनुष्यों में कोइ वैद्य बड़ा चतुर वैदि की विद्या का प्रवीन है हातिम ने कहा कि वैद्य से आप का क्या काम है क्या आप के राज्य में वैद्य नहीं मिलता बादशाह बोले कि हमारी जाति के वैद्य से कुछ आराम नहीं होता मैंने बहुत औषधि कर देखी बहुत दिनों से मेरे बेटे की आंखें दुखती हैं और वह सुंदरता में पूरण चंद्र के समान है और कोई दूसरा लड़का वाला मेरे नहीं बड़ा दुख है कि वह भी अंधा होगया और किसी भांति पीर नहीं जाती हातिम बोले जो बादशाह ज़ादा अच्छा हो जाय और आंखें खुल जावें और पीर जाती रहे तो मुझे क्या इनाम मिले बादशाह ने कहा कि जो तू मांगेगा सोई पावेगा हातिम ने कहा कि जो इस बात पर बचन दो और सौगंद खाओ तो मैं बादशाहज़ादे की ऐसी औषधि करौं कि उन की आंखें जैसी थीं वैसीही होजायं तो उस समय मुह का मांगा इनाम पाओं बादशाह ने कहा कि मैंने माना प्रातःकाल हातिम ने वह मोहरा पगड़ी से निकाल थूक में घिस उसकी आंखों में लगा दिया सांझ होते होते लाली और पीर मिटगई परंतु दृष्टि न हुई बादशाह ने कहा कि देखने में तो आगे से आंखें अच्छी हैं पर दृष्टि अच्छी नहीं हुई तब हातिम ने कहा कि अंधकार में एक वृक्ष है उसे प्रकाश कहते हैं जो दो तीन बूंद उसके पानी के हाथ लगैं तो आंखों में दृष्टि होजावे यह सुनते ही बादशाह ने अपने परीज़ादों से कहा कि सच कहो तुममें से ऐसा कौन है जो वहां जाके उस वृक्ष का पानी लावे इस बात के सुनते ही वे सब कानों पर हाथ धर गये और सिर झुका के

लगे कि पृथ्वी नाथ उस के मार्ग में बडे बडे खर के हैं उसमें बहुत प्रेत पिशाच रहते हैं वहां हम मे से कोई नहीं जा सकता है क्योंकि वे दुष्ट बड़े बली हैं हम को जीता न छोड़ेंगे आगे जो आज्ञा हो सो करें इतने में हुसना परी उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ बिनती करने लगी कि जो मेरा अपराध क्षमापन हो और यह मनुष्य मुझ को मिले तो मैं जाके उस वृक्ष का पानी लाऊं बादशाह ने कहा कि तेरा अपराध क्षमापन किया और वह और तेरे बाप को दी और उस मनुष्य को भी जो तू चाहे सो करे हातिम हुसना परी से बोला कि जो तू चाहे कि मुझे जीते जी अपने पास रक्खूं सो यह तो नहीं हो सकेगा जो तू यह बचन दे कि जब तक मै राजी चाहूं तब तक रहूं और जब चाहों तब चला जांव तो कुछ चिंता नहीं हुस्ना परी ने कहा कि मुझ को भी तुझ से और कुछ काम नहीं इतनाहीं चाहती हूं कि कुछ दिन तेरे संग साथ आनंद करूं और तेरे रूप की फुलवारी से अपने अभिलाष के फूल चुनूं फिर जिधर तेरा जी चाहे उधर चला जाना तुझे कोई न रोकेगा हातिम ने कहा कि इस प्रकार मैंने मन से अंगीकार किया अब शीघ्र ही जा यह सुन हुस्ना परी कई परियों को साथ ले वहां से चली चालीस दिन बीते उस अंधकार में जा पहुंची तो क्या देखती है कि एक बहुत बड़ा वृक्ष है जिसकी फुनगी आकाश तक पहुंची है और उस्से पानी की बूंद टपकती हैं हुस्ना परी ने एक शीशा रख दिया थोड़ी ही विलम्ब में वह शीशा पानी से भर गया तब वह उसका मुह बांध वहां से ले उड़ी इतने में खलक़ाश देव का चौकी दार जो हजार देव से उस वृक्ष की रखवारी करता था वह आ पहुंचा हुस्ना

परी ऐसी चौकस थी कि वहाँ से भागी और उसके हाथ न लगी चालीस दिन में आ पहुंची प्रणाम कर विनती की कि प्रभू आपके प्रताप से यह लौंडी उस कुएं का पानी लाई और उसके चौकीदारों के हाथ भी न लगी यह कहके शीशा आगे रख दिया कि ये पानी के बूंद हैं और भागने के क्लेश भी सब वरणन किये बादशाह ने बड़ी दया से हुस्ना परी को गले लगा लिया और पानी का शीशा हातिम को दिया उसने उसी क्षण मोहरे को रगड़ के बादशाहज़ादे की आंखों में लगा दिया और पट्टी से सात दिन तक बंधा रक्खा आठवें दिन जो उसकी आंखों से पट्टी खोली तो आंखें ऐसी दीख पड़ी जैसे मा के पेट से लेके निकला था ज्योंही शाहज़ादे ने अपने मा बाप के दरशन किये बहुत प्रसन्न हो हातिम के पैरों पर गिर पड़ा उसने उसको गले लगाया और परमेश्वर का धन्यवाद किया तब माहरू परी शाह ने उसका बड़ा गुण माना और इतना धन रत्न उसके आगे धरा जिसकी गिनती नहीं हो सकती हातिम ने कहा कि इतना धन रत्न मैं अकेला कहां ले जाऊंगा और क्या करूंगा हां जो आप अपने परीज़ादों के हाथ फ़रोकाश बादशाह के पास भेजवा दें तो निश्चय है कि वह मेरे देश में पहुंचा देगा अथवा मेरे साथ कर देना तब बादशाह ने अपने परीज़ादों से कहा कि जब ये अपने शहर को चलें तो तुम यह सब वस्तु इनके साथ ले जाना फिर हातिम ने विनती की कि पृथ्वीनाथ जो मुझे मिला है यह आपकी कृपा है पर उसकी आशा है कि जो देने कहा था सो दीजिये बादशाह ने कहा कि क्या मांगते हो मांगो हातिम ने कहा कि जो मेरा मनोर्थ पूर्ण करना है तो यह मोहरा जो आ

पके हाथ मे है सो दीजिये इस बात के सुनतेही बादशा
ह ने सिर नीचा कर लिया और कहा कि मैने जाना कि य
ह मोहरा हारस सोदागर की बेटी ने तुझ से मंगाया है
और मैने भी तुझे बचन दिया विवस हूं यह कह बादशा
ह ने मोहरा हातिम को दिया और कहा कि जब यह मोह
रा तू उसको देगा तब मै उसके पास रहने न दूंगा किसी
न किसी ढब मंगवा लूंगा हातिम ने कहा कि जब आशि
क़ का प्रयोजन हो चुके तब आप जो चाहे सो करें निदा
न हातिम ने उसको लेके अपनी बांह पर बहुत दृढ़ क
र के बांधा तब जहां जहां धरती मे द्रव्य गड़ी थी देख पड
ने लगी तब उसने अपने जी में कहा कि हां हारस सोदा
गर की बेटी ने इसी लिये यह मोहरा मुझ से मंगवाया
है निदान हातिम बादशाह से बिदा हुआ तब बादशा
ह ने अपने ऐयारों नज़र बाज़ों से कहा कि जिस समय
हारस की बेटी का ब्याह हो चुके तब कोई घात लगा के
यह मोहरा उसके हाथ से ले आओ हातिम वहां से हु
स्ना परी के घर आया थोडे दिन भोग बिलास कर उस्से
बिदा हुआ तब वे परीज़ाद धन रत्न लेके उसके साथ
हुये और फ़रोक़ाश के सेवाने तक पहुंचा के चले गये
वे देव जो हातिम के साथ आये थे इसे देख प्रसन्न हो
होके और उस धन सम्पत्ति समेत एक तख़्त पर बैठा
ल के कुछ दिन मे फ़रोक़ाश के पास ले गये वह उठ के
मिला और आदर सन्मान कर बहुत सराहा हातिम
एक रात वहां रह के प्रातःकाल बिदा हो गड्हे की राह
से सूरत में आ पहुंचा देवों को वह धन रत्न देके बिदा
किया फिर आप हारस सौदागर की बेटी के पास आया
और शाह मोहरा उसको दिया वह उसको देखतेही बु

हुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि अब मैं तेरी हूं जो चाहे सो कर हातिम ने कहा कि यह मेरा अभिप्राय नहीं है कि तेरे मिलाप की शराब मैं पियूं परंतु जो बहुत दिनों से इस शराब का प्यासा है उसको पिलाऊंगा तू भी मान ले उसने कहा कि मैं तेरे बस में हूं जो चाहो सो करो वहीं हातिम ने उसके बाप को बुलवा के उस सौदागर बच्चे का हाथ उसके हाथ में दे के कहा कि इसे अपना बेटा समझो उसने उसी समय व्याह की तैयारी कर अपनी बेटी को उसके साथ व्याह दिया दस दिन पीछे वह मोहरा उस लड़की के हाथ से लोप होगया वह रोने पीटने लगी तब हातिम ने उसका संतोष कर के कहा कि मैंने तेरे पति को इतना धन रत्न दिया है कि वह सात पीढ़ी तक काम आवेगा इतना क्यों बिलबिलाती है ऐसी ही कई बातें समझा हातिम वहां से बिदा हुआ और हुस्नबानू की बात के उपाय के लिये चला चलते चलते क्लेश सहते बहुत दिनों में किसी नदी के तीर जा पहुंचा वहां एक बड़ा महल बादशाहों के योग्य देख पड़ा उसके द्वार पर मोटे अक्षरों से लिखा देखा कि भलाई कर समुद्र में डाल यह उसको पढ़ के प्रसन्न हुआ और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहने लगा कि अब मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ आगे बढ़ा तो बहुत से मनुष्य महल से ऐसे निकले और हातिम को भीतर लेगये वहां जाके वह क्या देखता है कि एक सौ बर्ष का बूढ़ा तेजस्वी मनुष्य तख्त पर बैठा है हातिम को देखतेही उठ के गले लगा अपने तख्त पर बिठालिया और भांति भांति के खाने मंगवा के खिलाये जब हातिम खा पी चुका तब पूछा कि आपने अपने द्वार पर क्यों लिख रक्खा है उसने कहा कि मैं ठग था रात को मुसाफ़ि

रों को लूटता और सारे दिन मजूरी करता सांझ को दो
रोटियां घी से चुपड़ उन पर चीनी डाल नदी में फेंक देता
और कहता कि यह काम मैं परमेश्वर के लिये करता हूं
बहुत वर्ष ऐसेही बीत गईं एक समय मैं बेराम हुआ
और मरने लगा और ऐसा अचेत होगया कि मानो प्रा
ण निकल गये क्या देखता हूं कि कोई मुझे नरक दिख
लाता है कि तेरी जगह यही है और चाहता था कि नरक
में डाल दे कि दो मनुष्य आगे आय मेरा हाथ पकड़ कह
ने लगे कि हम इसे नरक में न जाने देंगे इसकी जगह न
रक नहीं है यह स्वर्ग में जायगा फिर मुझको वे स्वर्ग की
ओर लेगये इतने मे एक महात्मा उठ खड़ा हुआ और
कहने लगा कि इसको क्यौं लाये अभी इसके मरने में
दो सौ वर्ष रहे हैं इसी के नाम का एक और मनुष्य है
उसे लाओ वेही दोनो मुझे यहां पहुंचाय गये और कह
ने लगे कि हम दोनो वही दो रोटियां हैं जो तू परमेश्व
र के लिये नदी में फेंकता था इतने में मैं चेता और उठ ख
ड़ा हुआ और परमेश्वर की स्तुति करने लगा कि हे पर
मेश्वर तू बड़ा कृपालु है और मैं पापी जीव हूं मेरा अपरा
ध क्षमा पन कर और मैने पाप करने की प्रतिज्ञा की है
और मुझे भोजन आकाश से तू ही पहुंचावेगा जब प्रात
काल हुआ तब वैसीही दो रोटियां डालने गया कि नदी
से दो सौ मुहरैं निकल आईं मैने उन्हें लेलिया और
शहर में ढंढोरा पिटवाया कि जो किसी की मोहरैं नदी
में गिरी हों सो मुझ से ले पर कोई न बोला फिर दूसरे
दिन उसी प्रकार नदी पर गया वैसेही मोहरैं निकल
आईं उनको भी लाके रख छोड़ा ऐसेही दिन बीता औ
र रात हुई तो स्वपने का देखता हूं कि कोई मुझ से

कहता है कि दो शेरियों ने तेरी सहाय की है परम कृपा
ल परमेश्वर की आज्ञा हुई कि दो सो मोहरे नित्य मि
ला करैं उसमें तू कुछ परमेश्वर के लिये उठा और जो
र है उसमें अपने दिन काट इतने में मेरी आंख खुल
गई परमेश्वर को धन्य वाद कर दंडवत की फिर मैंने य
ह मकान बनाया और उसै द्वार पर यह लिख दिया अ
व भी वैसे हीं दोसो मोहरैं पहुंचती है मैं बटोहियों
भिखारियों को देता और खाना खिलाता हूं और पर
मेश्वर का भजन स्मरण करता हूं अब मेरे जीने के दो
सो वर्ष रह गये हैं और इस मकान को बने भी सो वर्ष हु
ये अरे प्यारे तब से मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर ने
मेरे अपराध क्षमापन किये और इतने वर्ष जीने को
दिये और भोजन बिन परिश्रम पहुंचने लगा तब से
मै आनंद पूर्वक रहता हूं और किसी बात की चिंता न
हीं करता यह बात परमेश्वर सब के भाग्य मे देवे यह
सुन हातिम ने परमेश्वर का धन्य वाद कर प्रणाम किया
तीन दिन उसके पास रह चौथे दिन उस्से बिदा हो शाहा
बाद की ओर चला थोड़े दिन बीते एक जंगल में पहुंचा व
हों क्या देखता है कि एक वृक्ष के नीचे काला सांप श्वेत
रंग के सांप से लड रहा है और ऐसा जाना कि काला
उसे मार डालेगा हातिम यह वृतांत देख के दौड़ा औ
र पुकार के कहा कि अरे दुष्ट क्या करता है यह सुन वह
डरा और उसे छोड के चला गया वह दुखी भाग न सक
ता था इस्से उसी वृक्ष के नीचे ठहर गया और घबरा के
इधर उधर देखने लगा हातिम ने कहा कि अरे सांप
तू मत घबरा जब तक तू सुचित न होगा तब तक मैं यहीं
रहूंगा और कहीं न जाऊंगा एक आध घड़ी में सम्हलके

उसी वृक्ष पर चढ़गया और मनुष्य होके हातिम को
झुक झुक सलाम करने लगा यह दृश्य देखि हातिम
अचंभे में हुआ और मन में विचारने लगा कि यह क्या
भेद है इतने मे सांप बोला कि तुम अचंभा न करो मै
जिन्न हूं और इस शहर का बादशाह मेरे बाप का गु
लाम है बहुत बर्षों से यह मेरे प्राण का बैरी हुआ है अ
ज घात पाके मा रडाला चाहता था कि परमेश्वर ने मेरी
रक्षा के लिये तुझे भेजा जो मैं इस दुष्ट के हाथ से छूटा हा
तिम ने कहा कि भला मैंने जाना अब तू जहां चाहै वहां जा
क्योंकि मुझे भी एक काम है बहुत नहीं ठहर सकता उस
ने कहा कि हे दीनों के सहाय करने वाले मेरा घर यहां
से समीप है जो दया करके चलै तो मेरे ऊपर बड़ी कृपा
है हातिम उसके साथ चला इतने में एक बड़ा भारी ल
शकर सामने से दिखाई दिया हातिम ने पूछा कि यह
किसका लशकर है वह बोला कि मुझी फ़क़ीर का फिर
हातिम को लिये हुये अपने घर आया और एक जड़ाऊ
तख़्त पर बैठाला और बड़े आदर सन्मान से खिला
पा पिलाया और बहुत सा धन रत्न उसके आगे रक्खा
और रात भर नाच रंग की सभा रही हातिम ने कहा कि
धन रत्न मुझे नहीं चाहिये फिर शाहज़ादे ने प्रातः का
ल उस ग़ुलाम को मारडाला और हातिम बिदा होके
शाहाबाद की ओर चला अढ़ाई बर्ष पंद्रह दिन मे शाहा
बाद पहुंचा और कारवां सराय मे उतरा मुनीर शामी
से मिला यह समाचार किसी ने हुस्नबानू को पहुंचाया
उसने वहीं उसे बुलवा और एक बहुत अच्छा मकान
में परदा डाल आप बैठी और बाहर उसे बिठा के समा
चार पूछा कि बहुत दिनों मे तुम आये कहो क्या समाचा

र लाये हातिम ने जो देखा था और परी रूके मुह से सु
ना था सो अच्छे प्रकार बरणन किया और कहा कि उ
स वृद्ध मनुष्य ने इस लिये अपने द्वार पर लिख के ल
गादिया है हुस्नबानू यह सुन बहुत प्रसन्न हुई और
हातिम के साहस की सराहना कर बोली कि तुम्हीं
ऐसे थे जो यह समाचार लाये नहीं तो इस काम क
रने का किसका मुह था फिर कई मे वे के थाल हाति
म के उतरने की जगह भेजवादिये उसने आके मुनीर
शामी के साथ खाना खा परमेश्वर का धन्य वाद कर
कहा कि मुनीरशामी तू मत घबराना अब थोड़े दि
नो में परमेश्वर की कृपा से तेरी प्यारी से तुझे मिला
ये देता हूं उसको ऐसे धीर्य दे आप हुस्नबानू के पा
स गया और कहने लगा कि अब तुम्हारी कौन सी बा
त है कहो कि में उसके ढूंढने मे परिश्रम करूं हुस्नबा
नू ने कहा कि तीसरी बात यह है कि एक मनुष्य जंगल
मे खड़ा कहता है कि किसी से बुराई न कर जो करेगा
तो वही पावेगा॥

तीसरी कहानी में इस समाचार लाने का ब रणन है कि एक मनुष्य जंगल मे खड़ा कह ता है कि किसी से बुराई न कर और जो करेगा तो वही पावेगा

हातिम इस बात को सुन परमेश्वर का स्मरण कर जं
गल को चल निकला एक महीने पीछे एक पहाड़ ऐ
सा दिखाई दिया जो आकाश से बातें कर रहा था ज
ब उसके नीचे गया तो कराहने रोने की एक पुकार सुन
पड़ी सिर उठा के इधर उधर देखने लगा तो कुछ न दे
ख पड़ा उसके पास गया तो क्या देखता है कि एक वृक्ष

की छांह में संग मर मर की सिला रक्वी है उस पर एक परम सुन्दर तरुण मनुष्य बिखड़े बाल दुबला पतला रोगी साउस वृक्ष की डाली पकड़े आँखें बंद किये खड़ा है और बारम बार कराह कराह यह पढ़ता है कि शीघ्र आओ। बिरह सह्यो नहिं जाय हातिम उसे देख अचंभे में हुआ कि यह क्या भेद है थोड़ा आगे बढ़ पूछा कि तू इस दशा को क्यों पहुंचा अपना वृतांत बरणन कर वह आंखें मूंदे ध्यान मे था उत्तर न दिया दूसरी बेर फिर उसको पुकारा तब भी कुछ न बोला तीसरी बेर हातिम ने यों कहा कि मैंने जाना कि बहिरा है क्योंकि मैंने तीन बार पुकारा तू ने उत्तर न दिया यह सुनतेही उसने आँखें खोल कहा कि तू कौन और कहां से आया है मुझ से तेरा क्या काम है हातिम ने कहा कि मैं भी मनुष्य हूं फिरते फिरते यहां भी आनिकला तू अपना वृतांत बरणन कर कि ऐसा हक्का बक्का क्यों रोता है और यहां किस लिये खड़ा है वह बोला कि अरे बसेही तुम ऐसे बहुत मनुष्य इस मार्ग से आये और मेरा वृतांत जाना पर किसी ने मेरे दुःख की औषधि न की वृतांत कहना वृथा है तू अपनी राह ले क्यों दुःख देता और मुझे आपदा में डालता है हातिम ने कहा कि जब तू ने अपना वृतांत बहुत मनुष्यों से कहा है [illegible] परमेश्वर के लिये मुझ से भी कह कि मेरे मन का अभिलाष न रह जाय उसने कहा कि क्षण भर तू मेरे पास बैठ जा मैं चेत में आऊं और अपना वृतांत कह सुनाऊं हातिम बैठ गया वह कहने लगा कि अरे दुखियों के दुःख दूर करने वाले मैं सौदागर हूं मेरा क़ाफ़िला रूम को जाता था मैं उसके साथ यहां तक आ पहुंचा प्रातःकाल क़ाफ़िला छोड़ इस पहाड़ पर आ दिशा बाधा से निश्चिंत हो इस वृक्ष के नीचे आया यहां एक परम सुंदर कांता देख मुझे ऐसी

मूर्छा आई कि मै धरती पर गिर अचेत होगया और वह मेरा सिर अपनी गोद में रख गुलाब छिड़कने लगी जब मुझे चैन हुआ तब अपना सिर उसकी गोद मे देख अति प्रसन्न हो उस पर आशिक़ होगया और उठ खड़ा हो उससे पूछा कि प्राणदाता सुकुमारी तू कौन है और इस उजाड़ जंगल में क्या करती है वह बोली कि मैं परी हूं और यह पर्वत और क़िला मेरा मकान है तुझसा मनुष्य चाहती थी सो परमेश्वर ने आज मिला दिया इस प्यार प्रीति की बातें सुन मै ऐसा बावला होगया कि मैं अपने धन संपत्ति और क़ाफ़िले को भूल गया और वह ऐसेही मेरा प्यार करती रही कि मेरे प्राण पक्षी को उसने अपने अक़्ल के जाल मे फंसा लिया तीन महीने रात दिन उसके साथ आनंद करता रहा एक दिन मैने उससे कहा कि प्यारी इस जंगल मे रहने से कौन सा सुख है चलो शहर में चल के सुख से रहैं उसने कहा कि जो तुम्हारा जी ऐसा ही चाहता है तो मेरा घर यहां से बहुत समीप है अपने लोगों से मिलि के बिदा हो आऊं पर मेरे आने तक यहां से कहीं न जाना मैने कहा कि अच्छा जैसा तुम्हारा जी चाहै पर सच कहो कि कब आओगी उसने कहा कि सात दिन में पर जो तू कहीं चला जायगा तो बहुत पछितायगा मुझे इसी दसा से सात वर्ष बीते पर वह बचन भंग धन धर्म की लुटेरी न आई और मैं उसके बचन पर कहीं भी नहीं जा सकता क्योंकि ऐसा न हो कि वह आजाय और मुझे यहां न पावै तो नजानिये कि मेरे लिये क्या कर बैठे और इतना पराक्रम नहीं कि कहीं जाके उसका पता लगाऊं मेरा आहार वृक्षों के पत्ते और इसी झरने का पानी है क्या करूं धरती कठोर आकाश दूर न रहने को जगह न चलने को पैर

यह चौपाई मेरी दसा के अनुकूल है - तेरा विरह कौन
को भाता। धरनि कठोर दूर आकाश। - यह वृतांत सुन-
हातिम बहुत कुढ़ा और आंखों मे आंसू भर कहने लगा
कि उसने अपना नाम और मकान बतलाया हो तो मुझ
से कहो वह बोला कि इतना तो जानता हूं कि उसके कुटु
म्बी लक्का परवत पर रहते हैं पर यह नहीं जानता कि वह
कहां गई और अब कहां है हातिम ने पूछा कि जब वह
तुझ से बिदा हुई तब किस ओर गई उसने कहा कि मेरे सा
मने दस बीस पग चली थी फिर न जानिये कि किस ओ
र लोप होगई हातिम ने कहा कि जो तुम को उसकी चाह
है तो हमारे साथ लक्का परवत को चलो परमेश्वर की कृ
पा से उसका पता लगा लेंगे वह बोला कि जो वह यहां आ
वे और मुझे यहां न पावे तो फिर मुझे कहने को जगह न र
हेगी न वह हाथ आवेगी जो मिलाप होना है तो यहीं हो
रहेगा नहीं तो उसकी आशा मे इसी जगह मरजाऊंगा
यह दुखभरी बात सुन हातिम आंखों में आंसू भर क
हने लगा कि प्यारे जो उस का नाम जानता हो तो बतला
दे उसने कहा अलगन परी कहते हैं हातिम ने कहा कि
धीर्य रक्खो मैं लक्का परवत पर जाता हूं तेरी प्यारी का प
ता लगा तेरे पास लाता हूं या तुझे वहां लेजाऊंगा उसके
मकान का पता लगा इन्हीं पाओं फिर आता हूं वह बो
ला कि अब तक मैंने कोई ऐसा मनुष्य नहीं देखा कि अपना
काम छोड़ दूसरे का काम करै क्यों बातें बनाता है जा अप
ना काम कर हातिम ने कहा कि प्यारे मैं अपना सिर ह
थेली पर धरें फिरता हूं कि परमेश्वर हेत किसी काम आ
वे और जिसको चाहिये सो ले अपने प्राण खोऊंगा उस
का काम बनाऊंगा मेरी बात सच जान झूठ मत समझ नि

दान ऐसी दो चार बातें कर उस्से बिदा हो जिधर परी गई
थी उधरी चलदिया थोड़े दिनों में उस परबत पर से दूस
रे परबत पर पहुंचा और उस पर चढ़ गया तो क्या देखता
है कि बहुत से मेवे के वृक्ष लहलहाते और कितने फूलों
से लदे झूम रहे हैं और उस्से आगे एक जगह बहुत रम
णीक देख पड़ती है और वहां चार वृक्ष बड़े और घने ल
गे हैं और ठंढी पवन चलती है हातिम बड़े अभिलाष से
उस मकान में गया और जाते ही सहसा उसकी आंख ल
ग गई सोगया सांझ को चार परियां आईं और मसनदें
बिछाकर बैठी हातिम को देख आपुस में कहने लगी कि
यह कौन है और यहां कैसे आया इस्से पूछना चाहिये
यह समझ कर उसके पास आईं और उसे जगा के कहने
लगीं कि अरे मनुष्य तू यहां कैसे आया और किस लिये
यह मनोर्थ किया हातिम उनकी बोली सुन चौंक पड़ा औ
र उठ के इधर उधर देखने लगा तो क्या देखता है कि चारि
परियां जवाहिर में लदी हुईं सरहाने बैठी हैं और यहीं बा
तें कर रहीं हैं हातिम उठ के कहने लगा कि यहां मुझे परमे
श्वर लाया है मैं लक्का परवत और अलगन परी को देख
ने जाता हूं उसका यह कारण है कि अलगन परी एक मनु
ष्य से सात दिन की अवधि कर वहां गई है और वर्ष बीते
कि वह एक वृक्ष के नीचे उसके स्मरण में व्याकुलता से
तड़प रहा है और उसके प्राण ओठों पर आगये हैं मैं
इसलिये जाता हूं कि उसको समझाऊं कि बात कहना
और न निबाहना अच्छा काम नहीं है यह सुन वे मु
सक्याईं और कहने लगीं कि अलगन परी परवत की बा
दशाह ज़ादी है उसे ऐसी कौनसी अटक थी जो मनुष्य
से मिलने का क़रार करती हमने जानलिया कि तू बाव

ना है कि तो उस परबत और अलगन परी के देखने का मनो
र्थ किया और जो तू वहां जायगा भी तो जीता कब बचैगा हाति
म ने कहा कि हो सो हो मै वहां गये बिन नहीं रहता उन्हूं ने
कहा कि तो तू हमारी संगति अंगीकार करे और आज य
हां रहना अपना धन्य भाग समझै तो हम कल्ह लक्का पर
बत का मार्ग दिखा देवैंगीं हातिम ने कहा कि बहुत अच्छा
किसी प्रकार यह काम हो निदान हातिम वहां रहा और व
ह रात भोग बिलास में व्यतीत की प्रातः काल होतेही लु
क्का परबत का रास्ता लिया और वै हातिम के साथ हुईं सा
त दिन तक रात दिन चली गईं आठवे दिन एक जगह पहुं
च के कहने लगीं कि अब हम इसके आगे नहीं जा सकती
क्योंकि इसके आगे हमारा सिवाना नहीं तू सीधा चला जा
थोड़े ही दिनों में लक्का परबत तक पहुंच जायगा हातिम उ
न से बिदा हो आगे चला महीने भर में एक दुराहे पर पहुं
चा रात भर वहीं रहा दो चार घड़ी रात बीते बस्ती की ओर
से रोने का शब्द उसके कान में पड़ा वह चौंक के उठ बैठा
उस शब्द पर मन लगा जी में कहने लगा कि हातिम तू पर
मेश्वर के मार्ग पर सन्नद्ध हुआ है जो उस रोने कराहने को
सुन के बैठा रहै तो परमेश्वर को क्या उत्तर देगा और ज
गत में तेरा नाम क्या रहैगा भला यही है कि अपना सुख
छोड़ उस दुखी की सुधि ले जो तेरे हाथ से किसी का काम
निकलै तो संसार वृक्ष से तू ही भलाई का फल पावैगा
यह समझ के उठा और सारी रात इधर उधर ढूंढता फिरा
प्रातः काल होतेही जिस ओर से शब्द आया था उसी ओ
र चला और वहां आ पहुंचा तो क्या देखता है कि परम सुंद
र एक मनुष्य रो रहा है हातिम ने पूछा कि तू ऐसा क्यू क्र
यों रोता और दुख भी करा हैं लेता है ऐसा कौन कठोर

चिन्ह था जिसने तुझे सताया और जंगल में डाल दिया तू अपना वृत्तांत मुझे भी जता दे इस धीर्य देने से वह और भी पुकार पुकार रोने लगा और कहा कि मैं सिपाही हूं नौकरी के लिये अपने शहर से निकला था भूल के इस देश में आ पहुंचा और यहां के रहने वालों से पूछा कि इस बस्ती के हाकिम का क्या नाम है किसी ने कह दिया कि इस शहर का मालिक मसरूर जादूगर कहाता है इस बात के सुनतेही मैं डरा और वहां से भाग के एक जंगल की ओर चला मार्ग में एक परम रमणीक बाग़ दिखाई दिया मेरे मन में उसके देखने का यहां तक अभिलाष हुआ कि उसके समीप जा और घोड़े से उतर उसमें गया ही था कि दो ही पैग चला हूंगा कि परियों का झुंड जड़ाऊ गहने और जरतारी कपड़ों से झम झमाती देख पड़ा मैंने अपनी बुद्धि में जाना कि किसी अमीर की स्त्रियां बाग़ देखने को आई हैं यह उचित नहीं कि किसी की स्त्रियों को कुदृष्टि से देखिये यह सोच के वहां से फिरा कि उन स्त्रियों ने रोक के अपनी स्वामिनी से कहा वह मसरूर जादूगर की बेटी थी इस बात को सुन मसनद से उठ मुझे बुलवा एक चमत्कार के मकान मे लेगई और अपने पास बैठाल आदर सन्मान की बातें करने लगी इतने में उसका बाप भी उस बाग़ मे आया पहिले तो मेरे घोड़े को देख लोगों से पूछा कि यह घोड़ा किसका है डर के मारे कोई न बोला आगे बढ़ फिर उस रूप सभा दीपक के पास मुझे पतंग सा देख लाज की आग में जलगया पास आके चाहता था कि उसका गला पकड़ के धरती पर दे पटके वह लड़की डरी और चिल्लाई कि मैं निरापराध हूं परमेश्वर के लिये पहिले अपराध की प्रतीति कर लो फिर चाहियो सो कीजियो यह

सुन वह ठहर गया इतने में दाई ने आके कहा कि शाहज़ादी
तरुण हुई है और इस शहर के लोगों में कोई आपके स
माद होने के योग्य नहीं हैं यह बटोही बड़ा प्रवीन और कि
सी बड़े उत्तम मनुष्य का बेटा जान पड़ता है क्योंकि उसने
मारे लाज के शाहज़ादी से अभी तक बात भी नहीं की भला
यही है कि शाहज़ादी को उस्से ब्याह दो जो उन दोनों को नि
रपराध मारोगे तो जगत में अपयश और उनके मारडा
लने का पाप आपके सिर सदा बना रहेगा परमेश्वर को क्या
उत्तर दोगे तब उसने अपनी बेटी से पूछा कि तेरी इच्छा क्या
है उसने कहा कि आज तक मैंने किसी अनजानते पुरुष
का मुह नहि देखा पहिले
पहिल यही देख पड़ा है इस लिये मैंने इस बात को अंगीका
र किया उसने कहा कि बहुत अच्छा यह तुझ को फलै पर
यह मेरी तीन बातें पूरी करे यह सुन मैं बोला कि जो कुछ
आप आज्ञा करेंगे सो सिर धरूंगा पहिले एक जोड़ा परी
रुका ला फिर लाल सांप की मणि तीसरे खौलते घी के
कराह में गिर के जीता निकल आ तब मैं अपनी बेटी तुझे
दूंगा उसकी ये बातें सुन मैं घबराया और इस बहाने से इ
स भयानक बन में आ पड़ा अब मारे भूख प्यास के मुझे
इतना पराक्रम नहीं जो अपनी जन्म भूमि को जाउ और
उसकी बातें पूरी कर अपनी प्यारी से मिलूं दो वर्ष से ब
गूला सा चारों ओर उड़ता फिरता हूं हातिम ने कहा कि
मैं परमेश्वर हेत ये बातें पूरी करके तेरी प्यारी से तुझे मि
लाऊंगा यह मेरी बात सच समझ परमेश्वर ने इसलि
ये मुझे उत्पन्न किया है कि किसी के बुरे समय काम आ
ऊं फिर सोचा कि गीदड़ मेरे लिये परी रुका सिर माज़ि
दरां से लाया था अब मुझको भी उस जंगल में अवश्य

जाना चाहिये यह समझ उससे बिदा हो अपना रस्तालिया थोड़ी दूर जाकर क्या देखता है कि क़िले के खंदक के चारो ओर बहुतसी लकड़ियां इकट्ठे कर बहुत से लोग आग लगाने का बिचार कर रहे हैं यह देख वह चिंता कर कहने लगा कि यहां आग लगाने का क्या कारण है किसी ने कह दिया कि एक जीव बड़ा मनुष्य घाती किसी ओर से आके तीन चार मनुष्य नित्त खा जाता है जो यही दसा रही तो थोड़े दिनों में सब शहर ऊजाड़ होजायगा यह बात सुन वह अपने जी में कहने लगा कि इस उपाधि को इन दुखी लोगों के सिर से टाला चाहिये यह सोच के सराय में आया और उसके पास एक बड़ा सा गड़हा खुदवाया और बहुत सी सूखी लकड़ियों से पटवा के उस में जा बैठा जब पहर रात गई तब वह आतेही देख पड़ा कि एक पहाड़ सा चला आता है जब पास आया तब हातिम ने पहिचाना कि इसका नाम मशामन है और इसके आठ पाव और सात सिर हैं एक सिर हाथी का सा और छः बाघ के से हैं जो सिर हाथी का सा है उसमें तो आंखें हैं जो उसकी बीच की आंख किसी चोट से फूट जाय तो निश्चय है कि यहां से भाग जाय और कभी इस ओर मुह न करै इतने मे वह मुह फैला ये शहर की ओर पहुंचा लोगों ने देखते ही क़िले के ओर पास आग भड़का दी उसकी ज्वाला ऐसी बढ़ी कि क़िला उसमें छिप गया वह इधर उधर फिरने लगा और उस हाथी के सिर से ऐसा शब्द निकला कि वहां के सारे जीव थरथरा गये और धरती थलक उठी फिर वह मरन हार हातिम के पास जा पहुंचा तब उसने एक तीर ऐसा तक के मारा कि बीच की आंख मे जा लगा वह अथमरा सा धरती पर तड़पने लगा

और ऐसा चिल्लाया कि सारा जंगल्ल थर थरा उठा फिर सह
मा उर के ऐसा भागा कि पीछे फिर के न देखा हातिम उ
स गड्हे से निकला जो रात रहगई थी वहीं कटी प्रातःका
ल उस वस्ती के रहने वाले आके उस्से पूछने लगे कि उसे
देख कैसे जीता रहा हातिम ने कहा कि मेरे ऊपर परमेश्वर
की कृपा थी उसने बचालिया उसजीव का नाम मशाम न
था परमेश्वर की कृपा से मैंने उसे मारा और तुम्हारे सिर से
दूर किया उन्होंने कहा कि हमको कैसे विश्वास आवे हा
तिम ने कहा कि आज की रात तुम सब क़िले की छत पर
वैठ के जागो जो वह आवे तो मुझको झूठा जानियो नहीं तो
सच्चा उन्होंने हातिम के कहने से वैसाही किया वह जीव
प्रातः काल तक न आया तब वे सबके सब हातिम के पैरों
पर गिर पड़े लाखों रुपये और सैकड़ों रत्न भरे थाल ला
लाके आगे धरे उसने कहा कि मैं अकेला इस धन रत्न को
ले के क्या करूं यह चाहिये कि इसे दुखी लोगों को बांट दें
कि परमेश्वर भला मानै और संसार में सुयश हो यह क
ह के वहां से विदा हुआ और किसी ओर चला एक दिन मा
र्ग में क्या देखता है कि एक सांप नेवले से लड रहा है औ
र देखि पडता है कि कोई न कोई उन मे से मारा जायगा हा
तिम बोला और ललकार के दौडा कि अरे पशुवो तुम
दोनों में क्या वैर है जो ऐसे लड रहे हो और अपने प्राण
खोते हो सांप ने कहा कि इस ने मेरे बाप को मारा है मैं इ
से मारूंगा नेवला बोला कि वह मेरा आहार था मैंने खा
या और इसको भी खाऊंगा हातिम ने कहा कि अरे ओन
जो तुझे मान्सही खाना है तो मुझसे कह मैं अपनी देह
का मान्स दूंगा और उस सांप से कहा कि जो तू अपने बा
प का बदला चाहता है तो मुझे मार कि मैं परमेश्वर के

मार्ग मे बहुत दिनों से सिर देचुका हूं यह बात सु
न वे दोनों लड़ने से रुक गये फिर न्योले ने कहा कि तूने अ
पना मान्स देने कहा था अब दे तो मैं खाके अपने घर
जाउं हातिम ने कहा कि जहां का मान्स चाहे वहां का मां
ग ले उसने कहा कि अपने गाल का हातिम छुरी निका
ल चाहता था कि अपने गाल का मान्स काट दे इतने में
न्योला पुकारा कि अरे शूर वीर ऐसी शीघ्रता न कर व
ह बात मैंने तेरी परीक्षा के लिये कही थी धन्य है तू और
तेरा बाप यह कह के दोनों मनुष्य होगये हातिम ने क
हा कि यह क्या कारण है कि तुम अभी पशु थे और अब
मनुष्य होगये उन्होंने कहा कि हम दोनों जिन्न हैं इस
के बाप को इसलिये मारा है कि मै उसकी बेटी पर आ
शिक़ हूं वह मेरा ब्याह उसके साथ न करता था और
यह उस लड़की का भाई है यह भी वैसीही बातें करताहै
अब इसे भी मारडालूंगा हातिम ने कहा कि तू अपनी
बहन का ब्याह इसके साथ क्यों नहीं करता उसने कहाकि
मै भी इसकी बहन पर आशिक़ हूं जो यह भी अपनी
बहन का मेरे साथ ब्याह ना अंगीकार करे तो मै भी मा
नों न्योले ने कहाकि मेरा बाप जीता है वह नहीं मानता
मै विवश हूं हातिम ने कहा कि अपने बाप के पास मुझे
ले चल मै उसे समझा बुझा के प्रसन्न करूंगा निदान वे
दोनों और हातिम चले थोड़ी दूर जाके न्योले ने कहाकि
मैं अपने घर जाता हूं वहां के लोग तुझे पकड़ के मेरे
बाप के पास ले आवेंगे वहां जैसी बने वैसी कीजो हाति
म ने उसके कहने से वैसा ही किया तब जिन्न उसको प
कड़ बादशाह के पास लाये उस बादशाह का नाम हु
त था उसने कहा कि अरे मनुष्य तू हमारे शहर में क्यों

आया है व तलादे हातिम बोला कि तेरे भले के लिये आया हूं उसने कहा कि मनुष्य होके जिन्न का भला क्यौंकरैगा- हातिम बोला कि मैंने जाना कि तू अपने बेटे के जीने से त्रस्त होचुका है जो ऐसा भूला रहा है इस बात के सुनते ही उसने कहा कि यह क्या कहता है मैंने अपने जीतव मे यही एक बेटा पाया है मैं तो उसे प्राण से भी अधिक प्यारा जानता हूं हातिम ने कहा जो तू उसका जीना चाहता है तो मेरा कहा मान नहीं तो वह आज कल्ह मे मारा जाता है उसने कहा कि अरे सच्चे मित्र परमेश्वर तुझ पर कृपा करि तू ने मेरा बड़ा उपकार किया और करता है पर इस भेद को तो प्रगट कर वह बोला कि तेरे बेटे ने किसी के बाप को मारडाला है वह उसको मारडालना चाहता है आज मैंने जंगल में तेरे बेटे के साथ लड़ते देखा था और तेरे बेटे के प्राण जाने वाले थे मैंने बड़ा बल करके तेरे बेटे को उसके हाथ से छुटाया पर एक न एक दिन माराजायगा क्यौंकि यह उसकी बहन पर आशिक़ है इसी में भला है कि दोनों का ब्याह करदे कि उन दोनों के आपुस में बैर मिटजाय बादशाह ने हातिम की यह बात प्रसन्न कर अपनी बेटी का ब्याह उसके साथ कर उसकी बहिन को अपने बेटे को ब्याह दी जब दोनों का मनोर्थ पूरा हुआ तब हातिम बादशाह से बिदा होने लगा तब उसने कहा कि इस भलाई के बदले मुझ से कुछ धन रत्न ले हातिम ने कहा कि बदला लेना मेरा काम नहीं फिर उसने बड़ी दीनता से कहा कि जो तू धन संपत्ति नहीं लेता तो मेरी छड़ी ले उसमें कई गुण हैं जो साप बिच्छू काटे तो बिष न ब्यापै और जल न भी न हो जो उसके नीचे हो रहे तो आग से न जलै जो कोई जादू करै तो वह भी उसके रखने

वाले का कुछ न कर सकैगा ओैर जो कोई नदी नद आपड़े
तो उसको उसमें डाल दे वह नाव सी होके बेड़ा पार करै
ओैर एक मोहरा देता हूं उसको भी अपने पास रख उस
में इतने गुण हैं जो मार्ग में लाल उजला काला साप मि
लै उस समय अपने मुंह मे रख लेना ओैर निर्भय रह
ना किसी का बिष न व्यापैगा हातिम ने उन दोनो को ले
लिया ओैर उस्से बिदा हुआ ओैर रात दिन चलना छोड़
कुछ काम न किया कई दिन पीछे एक बड़ा नद दिखाई
दिया कि उसकी लहर आकाश पर जाती थी हातिम ने
चिंता कर चारों ओैर देखा तो कोई आता जाता न दिखा
ई दिया इतने में उस छड़ी के गुण का स्मरण हुआ उसी
समय उसको पानी में डाल दिया वह नाव सी बन गई व
ह उस पर चढ़ के चला जब बीचो बीच धार मे पहुंची तब
पानी से एक घड़ियाल निकला ओैर उसे खींच के सात
कोस तक नीचे चला गया कही सांस न ली जब उसका पै
र धरती पर लगा तब हातिम ने आंख खोल के देखा तो एक घ
ड़ियाल परबत सा देख पड़ा यह घबराया ओैर वह दीनता
से बिनती करने लगा कि यह मेरा घर है इसे प्रबलता से की
कड़े ने छीन लिया है तुम से यह बिनती करता हूं कि मुझे मे
रा घर दिला दो हातिम ने कहा कि जान पड़ता है कि वह तुझ
से बड़ा बली है ओैर निर्बल घड़ियाल बोला कि मैं दुखी क्या
कहूं तुम देखो गे तो जानो गे सच तो यह है कि जो वह चाहै
तो मुझे अपने डंक की कतरनी से पकड़ दो टुकड़े कर डाले
इस समय चरने गया है होता तो देखते वह ये बातें कहि रहा
था कि वह कीकड़ा मुह फैला के आपहुंचा घड़ियाल हाति
म के पीछे जा छिपा ओैर कीकड़ा हातिम को क़िला सा दि
खाई दिया कि उसका एक ओैर का डंक पश्चिम ओैर एक

ओर का पूर्व को पहुंचा था इतने में कीकडे की दृष्टि जो घ
डियाल पर जा पड़ी तो ऐसी चिंग्घार मारी कि घड़ियाल
वेतसा कपने ओर हातिम भी आगा पीछा करने लगा कि
परमेश्वर इस उत्पात से कैसे बचौंगा मन मे यह कह ओ
जिन्नोंके बादशाह की छड़ी लेउठ खड़ा हुआ कीकडा उसे
देख जहां था वही रहगया इतने में हातिम ने पुकार के
कहा कि अरे किसी को दुख देना भला नहीं जो किसी को स
ताता है वह अपने के लिये कांटे बोता है तू इस घड़ियाल
को क्यों दुख देता है क्या तुझे रहने को जगह नहीं मिलती
यह सुन कीकडा बोला कि हम दोनों यहां के रहने वाले हैं
आपसमें समझ लेंगे मनुष्य को क्या काम जो हमारे बीच
में बोले हातिम ने कहा कि यह तू सच कहता है परमेश्व
र ने चौरासी लाख प्रकार के जीव उत्पन्न कर किसी को ज
ल किसी को थल में रक्खा है सभी उसके जीव हैं वह परम
पवित्र जगत का पालन करता नहीं चाहता कि कोई मेरा
जीव किसी के हाथ से सताया नजाय कीकडे ने कहा कि भ
ला अब तो मैं इस कहने से छोड़ देता हूं फिर तुझे यह क
हां पावैगा जो हिमायती बना के लावैगा मुझे इसे यहीं र
हना है यही बात है कि पानी में रह के मगर मच्छ से वैर
हातिम ने कहा कि अरे दुष्ट मैने जाना कि तू किसी पर द
या नहीं करता और न परमेश्वर से डरता है भला अब भी
कुछ नहीं गया जो अपना जीना चाहता है तो सब का दुख
देना छोड दे और यहां न रह। नही तो अभी धज्जियां कर
के उड़ा देता हूं इस बात के सुनते ही कीकडा हंस के कह
ने लगा कि हठ पर मैं उसे और तुझे दोनों को न छोड़ूगा य
ह कहके चाहता था कि अपने डंक से पकड़ हातिम के
दो टुकडे कर डाले इतने में हातिम ने वह जिन्न वाली

छड़ी ऐसी मारी कि उसके दोनों डंक खीरे से कट के धरती
पर गिर पड़े और वह किसी के सताने योग्य न रहा जबकि
कड़े ने देखा कि मेरे पास से हथियार जाता रहा तब जीव
के भागा और घड़ियाल उसके पीछे दौड़ा तब हातिम ने डा
ट के कहा कि अरे नपुंसक कहां जाता और उसे क्यों सताता
है जो अब तू उसे कुछ दुख देगा तो मैं तुझे मारडालूंगा इ
स बात के सुनते ही वह डरा और वहीं खड़ा रहा हातिम
आंखें बंद कर उस बेड़े पर चढ़ा और नदी के तीर जा लगा
और माजन्दिरां को चला और उसके पास जो पहुंचा एक वृ
क्ष के नीचे बैठ के सोचने लगा कि परमेश्वर की कृपा से मैं
यहां तक आ पहुंचा अब उस पक्षी के जोड़े को ढूंढ़ना चा
हिये कि वह कहां है इतने में रात होगई और वे पक्षी जो
चरने गये थे सो वहां से फिरे और एक वृक्ष पर बैठ के आ
पस में कहने लगे कि आज की रात एक मनुष्य परस्वार्थी
दूसरे के लिये क्लेश सहता यहां आया है और हमने अप
ने बाप दादे से उसका नाम सुना है वह तै का बेटा हाति
म है और परमेश्वर का निज जन है ऐसा न हो कि हमा
रा मिलाप न हो यह बात ठहरा के वे सब आये और हाति
म के पैरों पर गिर पड़े वह उन्हें देख अचंभे मे रह गया
क्योंकि उनका मुंह मनुष्य का सा और सारा बदन मोर
का सा था जो अपछरा भी उन्हें देखे तो मोहित होजाय
और वे पक्षी सुघर बोली से कहने लगे कि तुझे और तेरे
साहस और सूरता को जो तूने पराये लिये अपने तईं क्ले
श और परिश्रम मे डाला ऐसा जान पड़ता है कि कोई
मसखर जादूगर की बेटी पर आशिक़ हुआ है जो मस
ख़र ने हमारा एक जोड़ा मांगा है इसलिये तू यहां आया
है हातिम बोला कि यह तुमने सच कहा जो तुम अपना

एक जोड़ा मुझे दो तौ मानो उस अध मरे को जिलाओ और मुझे बिन दामों मोल लेलो मैं जब तक जीता रहूंगा तबतक तुम्से उरिण न होंगा और वह निराश अपना अभिलाष पूरण करके तुम्हारा भला मनावेगा इस बात को सुन उन्हों ने आपसमें सम्मत किया कि कोई ऐसा है कि अपने बचों का एक जोड़ा परमेश्वर हेत इसको दे कि धर्म का कार्य है इस बात के सुनतेही उनपंक्षियोंमे से एक उठा और एक जोड़ा अपने बच्चों का हातिम को देके कहा कि तू इसे जो चाहे सो कर और जहां चाहे वहां लेजा हातिम उसे ले उनसे बिदा हो मसरवर जादूगर के शहर की ओर चला बहुत दिनों में चलता दुख सहता उस मनुष्य तक पहुंचा जो सिर झुकायें बैठा कराह रहा था उस्से मिल के कहा कि प्रसन्न हो तेरा मनोर्थ पूर्ण हुआ वह जोड़े को देखते ही हातिम के पैरों पर गिर पड़ा हातिम ने उसे गले लगाया और वहां का वृतांत और मार्ग का दुख सब उसे कह सुना के कहा कि मसरवर जादूगर के सामने कहना कि यह जोड़ा मैं लाया वह सिपाही उस जोड़े को ले मसरवर जादूगर के सामने गया वह उसे देख प्रसन्न होके कहने लगा कि यह काम तेरा नहीं किसू दूसरे ने सहाय की है और जो तू लाया है तौ वहां के मकानौं का वृतान्त बतलादे जिस्से मन को संतोष हो उसने वृतांत विस्तार पूर्वक बरणन किया उसने कहा कि तू ठीक कहता है यह सब सच है अब जा और लाल सांप का मोहरा ला उसने कहा कि एक बेर उस सुकुमारी सुन्दरी चंद्रमुखी का मुख दिखला दे कि मुझे भी बल हो क्योंकि प्यारी के देखने से मन चैतन्य हो जाता है यह सुन उसने अपनी बेटी से कहा कि क्षण के लिये अपना मुख खिड़की

से निकाल के अपने आशिक़ को टुक सोभा देखा दे वह खिड़की खोल कार कटाक्ष कर झांकने लगी निदान इ सी देखा देखी में दिन बीत गया फिर उसने कहा कि अ व मैं लाल सांप का मोहरा लेने जाता हूं जो तू उसका कु छ पता जानती है तो कह दे कि वह किस धरती पर और कहां है उसने कहा कि मैंने अपने बाप दादे से सुना है कि वह कोह क़ाफ़ के जंगल में है यह सुन अपनी प्यारी से बिदा हो हातिम के पास आके कहा कि अब उसने ला ल सांप का मोहरा मांगा है हातिम ने कहा कि तू कुछ उ सका पता भी पूछ आया है कि वह कैसा है उसने जो सु ना था सो कह दिया हातिम बोला कि अब तो रोना कराह ना छोड़ दे मैं तेरे काम में तन मन से परिश्रम करता हूं और अभी जाता हूं पर कृपाल परमेश्वर की दया से ते रा मनोर्थ शीघ्र पूर्ण होता है ऐसी बातें कह उससे बिदा हो कोह क़ाफ़ की ओर चला कई दिन चल के एक दिन दिशा बाधा के लिये जाता था क्या देखता है कि एक सत रंगा बिच्छू कुलंग चिड़िया के समान जंगल में चला जाता है हातिम उसे देख के डरा और अपने जी में कहने लगा कि परमेश्वर जानता है कि मैंने ऐसा बिच्छू अपने जी ते जी नहीं देखा और वह जाके किसी कोन में छिप रहा औ र बराबर कहता था कि देखा चाहिये कि रात को यह क्या करता है उस जंगल के इधर उधर कई गांव बस्ते थे वहां के लोगों ने जो बटोही को देखा तो खाने पीने से आदर कि या हातिम ने खाना खा पानी पी एक वृक्ष के नीचे बैठ के परमेश्वर का भजन स्मरण करने लगा और जंगल में ब हुत से घोड़े गायें इकट्ठे हुई हैं और उनके पास तीन चार चाकर सो रहे थे थोड़ी रात गये वह बिच्छू पत्थर के नीचे

से निकला और गांव की ओर गया और उछल के एक गाय के सिर पर डंक मारा कि वह मरगई ऐसेही सब को मारडाला फि र घोडों के गल्ले में आया उन सबों को भी रक्षकों समेत मारडा ला फिर उसी पत्थर के नीचे छिप रहा प्रातःकाल होते उस गां व के रहने वाले जो उस जंगल में आये तो क्या देखते हैं कि वे दोनों गल्ले रक्षकों समेत मरे पडे हैं और सब के पेट में नीला पानी वहा जाता है तव लोगों ने हातिम से पूछा कि अ रे बटोही तू कैसे जीता रहा तव वह वोला कि मित्रों मैंने ऐ सा चरित्र देखा कि कभी नहीं देखा था कि एक सात रंग का विच्छू कुलंग चिडिया के समान आया उसी यह काम कि या है इतने में वह विच्छू फिर उस पत्थर के नीचे से निक ला और उनके सरदार के सिर पर डंक मारा वह तडपने ल गा और बिच्छू जंगल को चलागया वे लोग रोने लगे और हातिम उस विच्छू के पीछे होलिया थोडी दूर चला था। कि एक शहर नज़र पडा कि विच्छू लोट पोट के काला सा प बन गया हातिम और भी अचंभे में हुआ और अपने जी में कहने लगा कि परमेश्वर यह बिच्छू था साप कैसे हुआ और किसी विल में जा बैठा जब पहर रात गई तव सा प विल से निकल शहर की ओर चला हातिम भी उसके। पीछे होलिया वह साप बादशाही महल में मोरी से घुस गया और बादशाह को उस के वजीर की हवेली में पैठा वहां उसके बेटे को काट के निकला और उसी विल में जा वैठा प्रातःकाल शहर में पुकार मचगई कि रात के स मय बादशाह और वज़ीर के बेटे को साप ने काटा बडे सोच की बात है कि उनके प्राण वृथा गये इतने में सांझ हुई और साप फिर विल से निकला और किसी ओर च ला उसके पीछे हातिम भी आंख बचाये चला जाता था

और अपने जी में कहता जाता कि देखिये अब क्या करता है और कहां जाता है निदान प्रातःकाल होते होते एक नदी के तीर जा पहुंचा वहां सिंह होगया इतने मे दस बारह मनुष्य पानी पीने आये उन मे एक लडका चौदह पंद्रह वर्ष का परम सुन्दर था उस पर जा पडा उन मे से उसे उठाकर एक कोने मे लेगया वहां उसका पेट फाड डाला और कलेजे के टुकडे २ कर जंगल को चला हातिम भी उसके साथ चला थोडी दूर जाके सुन्दर स्त्री बनगया औ रस्ते के सिर पर जा बैठा हातिम अचंभे मे हुआ और एक वृक्ष के नीचे ताक लगाकर बैठ रहा इतने में दो भाई सिपाही के बेटे शहर से नौकरी के लिये निकले थे और बहुत दिन नौकरी कर कमाई किये अपने घर को जाते थे अनायास उस मार्ग से आ निकले जब उस स्त्री के पास पहुंचे तब वह रोने लगी उसका रोना उन्होंने सुना बडा भाई उसके पास आके क्या देखता है कि एक परम सुन्दर स्त्री बैठी रोरही है वह भी आंखों में आंसू भर पूछने लगा कि अरी सुकुमारी तू कौन है और इस बन में किसलिये रोरही है उसने कहा कि मेरा पति मुझे मेरे मायके से अपने घर लिये जाता था इतने मे जंगल से बाघ निकला और उसे उठा लेगया मैं अकेली रहगई मैं अपने मायके सासुरे का रस्ता नहीं जानती अब व्याकुल हूं कि क्या करूं और कहां जाव और यह भी नहीं जानती कि आगे कैसी आपदा पडैगी और मेरा रंडापा कैसे कटैगा उसने कहा कि जो कोई तुझे अपने पास रक्खे तो तू उसके पास रहे वा नहीं उसने कहा कि न रहूंगी इस बन में मेरा कौन है जो इस दुःख में साथी होगा इस बात को सुनि उसने कहा कि मुझे अंगीकार कर वह बोली कि तीन बात पर एक यह कि तेरे घर में दूसरी स्त्री न हो दूसरी यह कि मुझ से से

वा टहल न हो सकेगी तीसरे यह कि जब तक मैं जीती रहूं मु
झे क्लेश न देना न कुढ़ना उसने कहा कि मैं अकेला हूं जब तक
जीता रहूंगा तुझे छोड़ दूसरी स्त्री न करूंगा जो अपसरा भी
होगी तो उसका भी मुह न देखूंगा और परमेश्वर की कृपा से
घर में बहुत सी लौंडी बांदी गुलाम चेले हैं तुझे किसी बात का
क्लेश न होगा तू अपना मन चाहा काम उनसे लिया करना औ
र आज तक किसी ने अपनी प्यारी को दुख दिया है कि मैं तु
झे सताऊंगा उसने कहा कि इन बातों पर मैंने तन मन से
अंगीकार किया उसने उसका हाथ पकड़ लिया और आगे
चला हातिम भी उसके पीछे पीछे चला थोड़ी दूर जाके उस
स्त्री ने कहा कि मै तीन दिन से भूखी प्यासी हूं मारे निर्बल
ता के देह सन सनाता है जो खाने की वस्तु न मिल सके तो
पानी अवश्यक लाना चाहिये उसने यह सुन स्त्री को एक
वृक्ष के नीचे बैठाल के अपने छोटे भाई से कहा कि भाई चौ
कस रहना मैं कहीं से पानी लाऊं यह कह छागल कंधे पर
रख पानी लाने गया तब उस स्त्री ने उसके भाई से कहा कि
मैंने तेरे लिये उसके साथ रहना माना है तेरे देखते ही मेरा
मन मेरे बश न रहा नहीं तो ऐसे बूढे को क्यों अंगीकार कर
ती अब तुझे उचित है कि मुझे अपनी सेवा में रख उसने
कहा कि तुम मेरी मा बहिन के समान हो यह मुझ से कभी
न होगा फिर वह कहने लगी कि यद्यपि मैं उसकी जोरू
होती हूं पर तेरे ही साथ रहूंगी और तुझे देखा करूंगी उस
ने कहा कि यह भी नहीं होना इस खोटे मनोरथ को अपने
मन से दूर कर इस बात को सुन वह जल के कहने लगी
कि अब मैं तुझे कलंक लगा के तेरे भाई से कहूंगी कि यह
तेरे पीछे मुझ से कुकर्म करना और ले भागना चाहता था
नहीं तो यह बात मान ले उसने कहा कि जो तेरे मन में आ

वैसा कर मैं कभी न मानूंगा। यहीं बातें होरहीं थीं और हातिम
भी एक कौन में खड़ा हुआ सुनता था इतने में बड़ा भाई पा
नी से भरी छांगल लिये पास आ पहुंचा उस स्त्री ने देखते ही
अपने सिर के बाल खसोटे और गाल नोचे सिर पर धूरि डा
ल के सहसा चिल्लाने और चीख मारने लगी उसने पास आ
के पूछा कि मैं पानी लेने गया था तुझे क्या बाघ खाये जाता
वा दूसरा जीव फाड़े डालता था जो मेरे लिये अपनी इतनी
दुर्दशा करती है इसका क्या कारण वह बोली कि परमेश्वर
की धन्य दया तुझ पर और तेरे छोटे भाई पर अरे अभागी
कोई भी अपनी स्त्री को ऐसे कुकर्मी के पास छोड़ के कहीं
जाता है परमेश्वर ने मेरी लाज रक्खी ज्यों हीं तू पानी लेने
गया त्योंहीं इस अभागी ने मेरा हाथ पकड़ अपनी ओर
खींचा और चाहता था कि मेरी देह देखे और बिगाड़े और
मैं आप को खींचती छुटाती थी जब मैंने देखा कि छुटकारा
नहीं तब मैं चिल्लाने लगी पर कोई मेरी सहाय के लिये न
पहुंचा यह कहता था कि तू मुझे क्यों नहीं अंगीकार करती
क्या मैं तेरे योग्य नहीं हूं तू दस पंद्रह बर्ष की और मैं सोल
ह सत्रह बर्ष का नवीन तरुण हूं मेरा भाई तेरे योग्य नहीं
मैं तुझ पर आशिक़ होगया हूं घात पाके बड़े भाई को ठि
काने लगा दूंगा इस बात के सुनते ही वह मारे क्रोध के थर
थराने लगा और कहा कि अरे अधर्मी आज तक किसी ने भी
अपनी मा बहिन से ऐसा काम किया है जो तू किया चाह
ता था उसने बहुत सौगंद खाई पर उसने भाई के कह
ने का विश्वास न किया और गाली गलोज पर आग
या और एक तलवार उसके सिर पर ऐसी मारी कि छा
ती तक पहुंची और छोटे भाई ने भी ऐसी छुरी मारी कि
कलेजे पार होगई दोनों घायल ही के मरगये वह स्त्री भैं

स हो के आगे बढ़ी हातिम भी उस के पीछे हो लिया एक गां
व के पास पहुंची उस गांव के लोग देखते ही अपने घर ले
जाने के लालच से उसके पकड़ने के लिये सहसा दौड़े ज
ब पास आये उसने कितनों को लातों से और कितनों को
सींगों से मार डाला फिर बन में जाके एक बूढ़ मनुष्य बन
गई तब हातिम ने अपने मन में कहा कि अब इससे यह वृ
त्तांत पूछा चाहिये कि यह क्या चरित्र था यह विचार के शी
घ्र दौड़ा और पुकार के कहने लगा कि अरे बूढ़े बाबा टुक ठ
हर जा बाबा खड़ा होके कहने लगा कि हातिम तू प्रसन्न
तो है क्या कहता है हातिम बोला कि तुमने मेरा नाम कैसे
जाना उसने कहा कि तेरे नाम पर क्या मैं तेरे बाप का नाम
भी जानता हूं तुझे इस बात से क्या जो तुझे पूछना है सो पूछ
ले इस समय मुझे अवकाश नहीं एक अवश्यक काम है
हातिम ने जिस जिस भांति उसको देखा था उसका वृत्तांत
पूछा इस बात को सुन वह हंस के कहने लगा कि तुझे इस
के सुन्ने से क्या एक दिन तुझे भी खा लूंगा हातिम ने कहा
कि जब तक यह भेद मुझसे तू प्रगट करके न कहेगा मैं
तुझे न छोडूंगा तब उसने विवश हो के कहा कि मेरा नाम
काल मृत्यु है जिस प्रकार परमेश्वर की इच्छा होती है
उसी रूप से मैं सब के प्राण हर लेता हूं यह सुन हाति
म ने प्रसन्न हो के पूछा कि अब कहो कि मेरी मृत्यु क
ब है और कैसे होगी वह बोला कि अभी तो तेरे जीने
के दिन आधे भी नहीं बीते जब पचास बर्ष का होगा
तब एक बार भदेस गिर पड़ेगा और तेरी नाक से यहां
तक रुधिर बहेगा कि तू मर जायगा अभी तो तेरे जी
ने के बहुत दिन हैं इस बीच जो भला काम तेरे हाथ से
निकले उसमें शिथिलता न करना यह सुनि हातिम ने

परमेश्वर का धन्यवाद कर प्रणाम किया और जो सिर उ
ठा के देखा तो वह वृद्ध मनुष्य न देख पड़ा तब हातिम अ
रुण बन को चल दिया बहुत दिन बीते काली धरती में प
हुंचा वहां के सांप उसकी सुगंध पाके चारों ओर से दौड़े
हातिम जिन्नों के बादशाह की लकड़ी धरती में गाड़ उस
के पीछे बैठगया सांपों ने उसे चारों ओर से घेरलिया
और सारी रात यही दसा रही भोर होते ही वे सब जहां से
आये थे वहां चले गये हातिम भी वहां से आगे बढ़ा उज
ली धरती पर पहुंचा वहां उजले सांप भी वैसे ही सारी रा
त उसको घेरे रहे सवेरा होते उसी प्रकार चले गये हा
तिम वहां से चल के हरी धरती पर जा पहुंचा वहां भी
वैसाही वृतांत बीता फिरि प्रातःकाल वहां से चल के
लाल धरती पर पहुंचा तो क्या देखता है कि वह धर
ती कुसुम से भी अधिक लाल हो रही है कुछ दूर चला
था कि चलने की सामर्थ्य न रही मन में सोचा कि आगे
कैसे जाउं प्यास के मारे प्राण होंठ पर आये हैं पैरों से
चला नहीं जाता मुह से बात नहीं निकलती खड़ा होके
कहने लगा कि मेरे भाग्य में इसी जगह मरना लिखा है
क्योंकि न आगे बढ़ सकता हूं न पीछे फिरा जाता है सब
भांति परमेश्वर के मार्ग में मरना भला है यह समझ
के आगे बढ़ा दो तीन कोस गया होगा कि पैरों में छाले
पड़ गये तब बिबश होके गिरि पड़ा गिरते ही सब देह
में घाव होगये और जी डूब गया इतने में एक वृद्ध मनु
ष्य उसे उठा के कहने लगा कि हातिम यह समय घब
राने का नहीं है मन को धीर्य दे जो मोहरा तुझे रीछ की बे
टी ने दिया है कमर से निकाल मुह में रख ले हातिम ने
वह मोहरा मुंह मे रख लिया उसी घड़ी धरती की गरमी

और प्यास जाती रही हातिम उसके पैरों पर गिरि के कहने लगा कि यह गरमी किस कारण से हैं उस ने कहा कि लाल सांप के बिष से और इस धरती से उसके मुह की आग निकलती है इस्से इस धरती का रंग लाल है पहिले यह हरी थी यह बात सुन हातिम वहां से आगे बढा और मोहरे के कारण किसी भांति की गरमी उसे न व्यापी आधी दूर पहुंचा था कि लाल सांप ने हातिम की सुगंध पाके ऐसी फुंकार मारी कि मुंह की ज्वाला आकाश पहुंचती थी और उसका फन और देह ताड के समान और आग की ज्वाला उसकी नाक के नथुनों से बिषकी पवन सी निकलती और कोसों तक गीला सूखा जलादेती हातिम जो उस आग में पड़ा बहुत घबराके कहने लगा कि अब इस आग से हड्डी पसली तकभी जल्ल जाइंगीं पर उस मोहरे से थोडा थोडा ठंढा पानी उसके गले में जाता था इस्से जीता रहा निदान सांप हातिम को देख फन फना के लपका और आग के ज्वाले मुंह से छोडने लगा पर जिन्नो के बादशाह की छडी के गुण से बिष न व्यापा हातिम बचगया रात इसी दशा में बीती प्रातःकाल मुहरा लाल सांप के ओंठों पर आ रहा हातिम ने देखा कि एक गुले लाला लाल सांप के होठों पर चमक रहा है उसने जो छडी को दिखलाया वह सांप अपना सिर धरती पर पटकने लगा निदान इधर सूर्य निकला उधर वह अपने मुंह से मोहरा उगल अपनी बाबी में चलागया हातिम मोहरे के पास आया पर उठाने मे डरा और जी में कहने लगा कि ऐसा न हो कि यह गरम हो और मेरा हाथ न जलजाय इस्से यही भला है कि थोडा ठहरजाइये फिर कुछ बिलम्ब में हातिम ने अपनी पगडी से कपडा फाड मोहरे पर डालदिया तब वह न जला तब हाथ बढा मोहरा

उस पगड़ी में बाध लिया गरमी जाती रही और जंगल की धरती ठंडी होगई और हातिम वहां से चला वह मोहरा यों उपजता है कि जब उसे कोई उस्से लेजाइ तो बीस बर्ष पीछे दूसरा उपजे और उसके एक हजार गुण हैं कोई क हां तक बरणन करै निदान हातिम बहुत दिनों पीछे उस सिपाही के पास आ पहुंचा और वह मोहरा उसे देके सब बृतांत कह सुनाया वह हातिम के पैरों पर गिर पड़ा उस ने उसको गले से लगा लिया और कहा कि अब तू जा और इस मोहरे को मसखर जादूगर को दे दे वह उस मोहरे को ले हातिम समेत शहर में आया और मसखर जादूग र से मिलाप कर वह मोहरा उसके आगे रखदिया और क हा कि में इसे बड़े परिश्रम से लाया हूं उसने कहा कि मैं प हले इसकी परीक्षा कर लूं तब तेरी बात पर बिश्वास क रूं उसने कहा कि बहुत अच्छा क्या चिंता निदान मसखर जादूगर ने मोहरे की सब भांति परीक्षा कर ली जब निश्च य हुआ तब वह ऊपर से प्रसन्न और मन में लज्जित हो के कहा कि अब एक बात रही है उसे भी पूरी कर उसने कहा कि बहुत अच्छा तब मसखर जादूगर ने अपने लो गों को बुला के कहा कि एक लोहे का कराह घी से भर औ र चूल्हे पर धर सात दिन तक उसके नीचे रात दिन आं च करो उन्होंने उस के कहने से वैसाही किया जब वह क राह ऐसा खौला कि जो पत्थर भी उसमें गिरे तो जलके भ स्म होजाय तब उसने उस सिपाही से कहा कि अब तू इ स में कूद जो जीता निकलेगा तो अपनी प्यारी को पावेगा वह डरके हातिम से कहने लगा कि इस आग से मैं जीता न बचूंगा हातिम ने उसे धीर्य दे के कहा कि तू सोच मत कर प रमेश्वर का स्मरण कर वही यह भी पार करैगा हातिम यह कह

के यह मोहरा जो उसे रीछ की बेटी ने दिया था अपनी पगड़ी से खोल उसके हाथ में देके कहा कि इस को अपने मुंह में रख के इस जलते कराह में कूद पड और गोता मार निकल आ परमेश्वर की कृपा से तेरा एक बाल भी न जलेगा वह सिपाही उस मोहरे को मुंह में डाल मसख़र जादूगर से कहने लगा कि अब क्या कहता है उसने कहा कि इस कराह में कूद पड वह कराह के पास गया देखते ही कांपने लगा तब हातिम ने ललकारा कि चिंता मत कर यह प्रीति की आग है परमेश्वर का स्मरण कर वह हातिम की ललकार सुनते ही आंखें मूंद कराह में कूद पड़ा और एक गोता मारा उस खौलते घी को ठंढा पानी सा पाया तब इधर उधर कराह में फिरने लगा और बदन पर घी मलने और हंस के कहने लगा कि अब क्या कहता है बाहर आओं अथवा और दो चार घड़ी इसमें रहूं मसख़र जादूगर ने जो देखा कि वह उस में न जला और भला चंगा रहा लज्जित हो सिर झुका लिया तब हातिम ने कहा कि अब क्यों लाज करता है अपना कहा पूरा कर क्योंकि जो तू ने कहा इसने पूरा किया जो अब जादू करने के विचार में हो तो तेरा जादू इस पर कभी न चलेगा क्योंकि एक लाल मोहरा उसके पास भी है इस बात को सुन वह लज्जित हुआ और उस सिपाही को गले लगाया फिर ब्याह की सामग्री इकट्ठी कर अपनी बेटी को अच्छी बिधि से ब्याह दिया और बहुत सी आधीनता करके कहने लगा कि यह देश कोश सब तेरा है क्योंकि मेरे केवल यही बेटी है दूसरा कोई लड़का बाला नहीं तू ही मेरा बेटा है सिद्धांत यह कि वे दोनों आशिक माशूक़ आपुस में मिले तब हातिम बिदा हुआ और कहा कि भाई मुझे भी और काम ऐसे ही करने हैं मुझे बिदा कर मैं लक़ा पर्वत को जाता हूं

वह पैरों पर गिरि पड़ा और दुआयें देने लगा फिर कहा कि
परमेश्वर तेरा रक्षक और सहायक है रस्ता ले हातिम ने
अपना मोहरा उससे लेलिया और लका परबत को चला क
ई रात दिन चलके लका परबत के पास पहुंचा तो देखा कि
एक परबत आकाश से बातें कर रहा है पक्षी वहां पर नहीं
मार सकता और पशु की तो क्या सामर्थ्य कि उधर देख सके
हातिम इस विचार से उसके नीचे बैठ गया कि जो किसी यहां
के रहने वाले को देखौं तो पूछूं कि इसका मार्ग किधर से है इ
सी चिंता में था कि परीज़ादों का झुंड देखपड़ा वह उसके पी
छे दौड़ा पर न पाया और वह झुंड उसकी दृष्टि से लोप होग
या इतने में एक बड़ा गड़हा दिखाई दिया और एक चिकना
साफ़ पत्थर उसमें एक ओर लगा देखा तब हातिम ने अपने
मन में विचारा कि इस गड़हे की राह किसी ओर से नहीं दे-
खपड़ती इसमें क्योंकर जाइये फिर यह उपाय सूझा कि इ
स पत्थर से फिसिलते चलिये परमेश्वर चाहै सो करै निदान
ऐसाही किया भोर से सांझ तक लौटता पोटता चलागया
जब उसके पैर धरती पर लगे तब आंखैं खोलीं तो क्या दे
खा कि एक बहुत लम्बी चौड़ी परम रमणीक जगह है देख
ते ही उसका मन खिलगया थोड़ी दूर चलके मन में बिचार
ने लगा कि वे परीज़ाद किधर गये और इस जंगल के कि
सी ओर बस्ती है या नहीं यह सोच करता दो चार पैग आगे
बढ़ा था कि बहुत बड़ा और रमणीक मकान देख पड़ा मन
में बिचारा कि यहां लोग रहते ही होंगे चला चाहिये इतनेमें
कई परीज़ादों ने उसै देखा कि एक मनुष्य अपूर्वी बेधड़क
चला आता है वे सहसा अपनी जगह से उठ दौड़े और हा
तिम के पास आकर कहने लगे कि अरे मनुष्य यह जगह
तेरे योग्य नहीं यहां तू कैसे आया और तुझै कौन लाया वह

बोला कि सब का कारण और मार्ग सुझाने वाला परमेश्वर है वही लाया फिर उन्होंने कहा कि गड्हे की राह तू ने कैसे देखी उसने कहा कि मैं तुम्हें दूर से देख के दौड़ा तुम आगे जा के एक क्षण में लोप होगये मैं मन में बिचार ने लगा कि परमेश्वर वे सब यहां से कहां गये फिर जिधर तुम गये थे उसी ओर मैं भी चला इतने मे एक अंधेरा गड्हा दिखाई दिया उसे देख बहुत घबराया और मन में कहने लगा कि उसमें कैसे जांव फिरि सहसा मन में आगया कि उस पत्थर पर लेट के फिसिल पड़ूं और किसी भांति भीतर पहुंचौं वही किया और तुम्हारे खोज में यहां तक आपहुंचा पर अब तुम परमेश्वर के लिये बताओ कि इस परबत का क्या नाम है और यह बाग़ किस का है वे बोले कि इस परबत का नाम लक़ा है और यह बाग़ अलगन परी बादशाहज़ादी का है हम उसी के रखवारे हैं अब बसंत ऋतु आई है इस लिये हम इसके समाचार लेने आये हैं निश्चय है कि परसों तक बादशाहज़ादी भी यहां आवै और कहने लगे कि हम तुझे बाग़ में न आने देंगे क्योंकि तू बाग़ में आने से मारा जायगा तेरी नई तरुणाई पर हमको दया आती है हातिम बोला कि मेरा कोई ठिकाना नहीं कहां जांव मेरे भाग्य ने यह सहाय किया कि जिसके लिये इतना क्लेश सहा कि आया हूं वे शीघ्र आया चाहती हैं अब जो होनी हो सो हो यह बात सुन उन्होंने पूछा कि तुझे उससे ऐसा क्या काम है जो उसके मिलने का अभिलाष रखता है तू दीन मनुष्य वह परियों की बादशाहज़ादी हातिम ने कहा कि मनुष्य परी को चाहता है और परी मनुष्य को चाहती है इस बात के सुनते ही वे क्रोधकर कहने लगे कि क्या तू बावला है सच तो यह है कि जो कोई अपना मरना चाहता है सो ऐसी कठिन

जगह पैर धरता है फिरि सब के सब क्रोध कर दौड़े और उसको मारडालना चाहा वह सिर झुकाये चुपका खड़ा रहा फिरि वे आपुस में हंस के कहने लगे कि यह अद्भुत मनुष्य है न भगाने से भागता न डराने से डरता न किसी से लड़ता है ऐसे मनुष्य को कोई कैसे मारडाले और दुख दे यह कहिके फिरि उन्हों ने हातिम से कहा कि हम शीलवान हैं तेरे भले को कहते हैं कि यह जगह तेरे रहने की नहीं जो जीता जाया चाहता है तो अभी कुछ नहीं गया चुपका चला जा नहीं तो दुख पावैगा और मार डाला जायगा यह बात सुन के हातिम बोला कि जी के जाने का मुझे सोच नहीं मैं ने परमेश्वर के मार्ग में सिर दिया है जिन्हों ने परमेश्वर के मार्ग में मन लगाया है वे हथेली पर प्राण लिये फिरते हैं सदा उसकी इच्छा पर संतोष किये रहते हैं कि उसी ने सारा जगत बनाया है उसी की आराधना उचित है इस बात के सुनते ही उनके हृदय मे दया उपजी और कहने लगे कि हे मधुर लापी मनुष्य जो अलगन परी के देखने का अभिलाष है तो हमारे साथ आ हम तुझे किसी कोने में छिपा रक्खेंगे और वहां से अलगन परी को दिखा देंगे पर सर्प और रज के किनके का क्या संयोग निदान हातिम को एक कोन में लेगये और भांति भांति के खाने और मेवे खिलाये और उस्से हंसते बोलते रहे तीन दिन बीते हातिम से पूछा कि सच कहो कि तुम्हारे आने का क्या कारण है उसने कहा कि मुझे अलगन परी से कुछ कहना अवश्य है कि वह एक मनुष्य से सात दिन की अवधि करके यहां आई है और सात वर्ष बीत गये कि वह उसकी बाट देखते देखते मरणहार हो रहा है आंखे पथरा गईं और प्राण कंठ गत है सांस भी नहीं ले सकता तो भी दो तीन घड़ी

पीछे दुख भरे जी से कराह उठता है और यह तुक पढ़ता
है शीघ्र आओ विरह सह्यो नहिं जाय मैंने उसकी यह द
सा देख पूछा कि तेरा क्या वृतांत है उसने अपना दुख ओ
र से छोर तक वरण न किया वह सुन मेरा कलेजा जल गया
और मेरी आंखों से आंसू टपकने लगे इसलिये मैं आ
या हूं कि उसे उसके वचन का स्मरण कराओ भूल न ग
ई हो जो वह इसी आशा में मर जायगा तौ बड़ा अनर्थ है
उन्होंने कहा कि हमारी इतनी सामर्थ्य नहीं जो तेरा वृतां
त जाके कहैं परंतु तुझे बांध के उसके सामने लेजांय फिर
जो तेरे मुख से निकल सके सो कहि सुन लेना यह बात
हम मित्रता की रीति से कहते हैं क्योंकि जो हम तुझे आदर
सन्मान से लेजांय तौ वह हम पर क्रोध करैगी कि तुम म
नुष्य को क्यों सुख पूर्वक लाये हातिम ने कहा कि जिस ह
ब से बनै मुझे उसके पास ले चलो आगे मैं हूं और उस म
नुष्य विरह मारे का भाग्य निदान एक दिन अलगन परी
अपने महल से निकल बड़े छवि चिमतकार से कोर कटा
क्ष करती बाग़ की ओर चली आती थी कि उन सबों ने आगे
बढ़ झुक के सलाम किया वह आके तख़त पर बैठ गई औ
र वे परियां जो उसकी सहेली थीं कुरसियों पर सुरीति से
पांति की पांति बैठीं परीज़ादों ने बाग़ में आके हातिम से
कहा कि चल तुझे बादशाहज़ादी देखा देवैं यह कहि उसेला
के एक झरोखे के पास बैठाल दिया और कहा कि देख वह
जो धानी जोड़ा पहिने और सिर पर अंचल वस्त्र का दुपट्टा
ओढ़े जड़ाऊ तख़त पर छवि और अभिमान से बैठी है व
ही अलगन परी है हातिम को देखते ही मूर्छा आ गई
जब चेत हुआ तब परमेश्वर को दंडवत की और उसकी
रचना पर निश्चय किया और उस विरहा मारे मनुष्य को

मन से भुला दिया और उस परी पर आपही मोह गया य
हां तक कि खाना पीना छोड़ दिया इसी भांति तीन दिन बी
त गये तब रात के समय आंख खुल गई तो क्या सुनता है
कि किसी ओर से एक शब्द आता है कि अरे हातिम उठ
और आप को पहिचान इसी मुह पर तूने परमेश्वर के
मार्ग में सिर दिया है कि दूसरे की धरोहर में चोरी करे
और इस बात का अभिमान करे कि मैं जो काम करता हूं
परमेश्वर के हेत करता हूं इस बात के सुनते ही वह चौंक
पड़ा और इधर उधर देखने लगा पर कोई देख न पड़ा फि
र अपनी जगह से उठ परमेश्वर से डर के बहुत रोया।
और सिर धरती पर धर के बड़ी दीनता से कहने लगा
कि परमेश्वर तू मेरा अपराध क्षमापन कर क्योंकि तू प
रम कृपालु और दयालु है फिर परीज़ादों से कहा कि मुझे
बादशाहज़ादी के पास ले चलो क्योंकि वह मेरे आने की
बाट देखती होगी मैं कब तक बैठा रहूं उन्होंने जो शाहज़ा
दी को प्रसन्न देखा हातिम का हाथ पकड़ दरवाज़े पर-
ले आये फिर उन में से एक ने बादशाहज़ादी से बिनती
की कि एक मनुष्य आपदा का मारा बाग़ के पास आनि
कला था हम उसको बांध के बाग़ के दरवाज़े पर लाये
हैं आगे जो आज्ञा हो सो करैं बादशाहज़ादी ने कहा कि
सामने लाओ जब हातिम सामने आया तब उसे देख
उस मनुष्य को भूल गई जिस्से सात दिन की अवधि कर
के आई थी और हातिम का हाथ पकड़ अपने पास कु
रसी पर बिठा लिया फिर पूछा कि तू कहां से किसलिये
आया है और तेरा नाम क्या है हातिम ने कहा कि मैं यम
न का रहने वाला तै का बेटा हातिम नाम हूं परी ने जो उ
सका नाम सुना तख़्त से उठ खड़ी हो कहने लगी कि

कि मैंने भी तेरा नाम सुना है कि यमन का बादशाहज़ादा है ब
ड़ी दया की जो यहां आया अपने आने का कारण कहो कि
इतना क्लेश क्यों सहा मैं तो तेरी लौंडी के समान हूं और तु
झे अपना सिर मौर जानती हूं हातिम ने कहा कि यह आप
की कृपा है मैं शाहाबाद से आया और अहमर जंगल की
ओर जाता था बीच में क्या देखा कि एक मनुष्य वृक्ष के नी
चे रो रहा है और आंखें बंद किये यह तुक पढ़ता है बेग आ
ओ बिरह सह्यो नहिं जाय मैंने पूछा कि तू ने अपनी यह
दुर्दसा क्यों की मुझ से अपना वृतांत कह उसने सब अप
ना वृतांत और तुम्हारी प्रीति और कृपा का बरणन किया
और कहा कि बादशाहज़ादी सात दिन की अवधि करके
गई है सात वर्ष बीते कि नहीं आई मैं उनके आने की आ
शा में रोता पीटता हूं न जा सकता हूं न रह सकता क्यों कि
उन्होंने चलने के समय मेरा हाथ पकड़ के कहा था कि जो
तू यहां से कहीं जायगा तो जन्म भर पछतायगा अब मैं व्या
कुल हूं कि प्यारी की आज्ञा कैसे भंग करूं जो मिलाप हो
ना है तो यहीं हो रहेगा मैंने जो उसकी यह दसा देखी और
सच्चा आशिक़ पाया तो अपना काम छोड़ तुम्हारे पास आ
या जो उस दीन दुखी पर कृपा करोगी मानो मुझे मोल लो
और उस मरते हुये को आयु दो उसने कहा कि मैं तुझे देख
उसे भूल गई मेरे योग्य वह नहीं उसकी चाह भी कच्ची है
क्योंकि सात वर्ष बीते वह अपने प्राण के डर से वहीं रहा
और लक़ा परबत पर पैर न रक्खा हातिम ने कहा कि जो
वह कच्चा है तो तेरी प्रीति क्यों मन में रखता और तेरे स्म
रण में क्यों अपनी दुर्दशा करता तू जो उससे अवधि कर
के आई है कि मैं सात दिन में आऊंगी तू मेरे आने तक
कहीं न जाना वह दीन दुखी सनेही निराश अपनी प्यारी

की आज्ञा कैसे भंग करै और उसको निश्चय है कि मेरी प्या री मेरे पास यहीं आवैगी अब मुझे भूंख प्यास के मारे क हीं चला जाना न चाहिये क्यों कि जो वह यहां आके मुझे न पावैगी तो क्रोध करैगी यह सुन उसने कहा कि कुछ कहै में उसे कभी अंगीकार न करूंगी हातिम बोला कि तू अ पने मन में विचार देख कि इस क्रोध का कारण क्या है सच तो यह है कि जब तक उसकी आशा पूरी न होगी मैं यहां से न जाऊंगा परी ने कहा कि तू यह भरोसा मुझ से न रख मैं उसके पास कभी न जाऊंगी हातिम ने कहा कि परमेश्व र के लिये मेरा परिश्रम वृथा न कर क्योंकि मैं ने बहुत से दुख सहे हैं तब वह बोली कि मैं तेरे कहने से बाहर नहीं भला उसे अपने पास रहने दूंगी पर उसका संग न करूं गी हातिम ने कहा कि मै भी तेरे दरवाज़े पर बैठ के इतने उपवास करूंगा कि मरजाउंगा और मेरे बध का पाप तुझे होगा यह कह के उठा और उस के दरवाज़े एक वृक्ष के नीचे जा बैठा और खाना पीना छोड़ दिया ऐसे ही सात दि न बीते तब रात को उसने स्वप्न देखा कि एक मनुष्य क हता है कि हातिम यह अलगन परी है इसने ऐसे ही अप ने विरह में बहुतेरों को मार डाला है तू पहिले इस्से कह के उस विरही मनुष्य को बुलवा और वह मोहरा जो तुझे री छ की बेटी ने दिया है उसको देकि वह अपने मुंह में रख ग़र ग़रा कर एक पियाले मे डाल किसी युक्ति से अलगन परी को पिलादे फिर परमेश्वर की गति का चरित्र देख कि अलगन परी उस पर मोहित होजाय यह बात सुन चौंक पड़ा और चिंता करने लगा इतने में प्रातः काल हुआ अल गन परी उसके पास आके कहने लगी कि हातिम तूने खा ना पीना छोड़दिया है जो तू मरजायगा तो मै तेरे मरने के